आदि देवी मातेश्वरी जगदम्बा सरस्वती

1. सूरत- गुजरात के राज्यपाल महामहिम भ्राता कैलाशपति मिश्र को शॉल ओढ़ा कर सम्मानित करती हुई ब्र.कु. लता बहन। साथ में हैं गुजरात के जल संचय मन्त्री भ्राता नरोत्तम भाई पटेल जी। 2. मुम्बई (बोरिवली)- रजत जयन्ती समारोह का उद्घाटन करते हुए महाराष्ट्र के राज्यपाल महामहिम भ्राता मोहम्मद फजल जी, हिन्दुस्तान इन्क के मालिक गफूर भाई जी, ब्र.कु. दिव्यप्रभा बहन तथा अन्य। 3. देवतालाब (रीवा)- मध्य प्रदेश की मुख्यमन्त्री बहन उमा भारती को ईश्वरीय सौगात देती हुई ब्र.कु. श्यामा बहन तथा ब्र.कु. नर्मदा बहन। 4. आबू रोड (शान्तिवन)- शिक्षकगण महासम्मेलन का उद्घाटन करते हुए राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि जी, ब्र.कु. भ्राला निर्वैर जी, ब्र.कु. मोहिनी बहन, राजयोगिनी दादी रत्नमोहिनी जी, ब्र.कु. मृत्युंजय भाई, ब्र.कु. मुन्नी बहन, ब्र.कु. सी.वी. चौकसी भाई, ब्र.कु. सुन्दरलाल भाई तथा अन्य। 5. बेहाला (कोलकाता)- भारतीय क्रिकेट टीम के कप्तान भ्राता सौरव गांगुली को ईश्वरीय सौगात देती हुई ब्र.कु. कल्पना बहन तथा ब्र.कु. मिथु बहन। 6. रायपुर- उच्चतम न्यायालय के पूर्व मुख्य न्यायाधीश भ्राता बी.एन. खरे जी से ज्ञान-चर्चा करती हुई ब्र.कु. कमला बहन। 7. आबू पर्वत (ज्ञान सरोवर)- समाज सेवा प्रभाग द्वारा आयोजित सेमिनार का उद्घाटन करते हुए राजयोगिनी दादी मनोहर इन्द्रा जी, ब्र.कु. निर्वैर भाई, बहन जस्विका देसाई, भ्राता हरिहर कोइराला, ब्र.कु. अमीरचन्द भाई, ब्र.कु. प्रेम भाई तथा ब्र.कु. अवतार भाई। 8. खिमलासा (बीना)- मध्य प्रदेश के वित्तमन्त्री भ्राता राघव जी को ईश्वरीय सौगात देती हुई ब्र.कु. जानकी बहन। साथ में हैं विधायिका बहन सुशीला सिरोडिया।

संजय की कलम से –

तीसरा चक्षु खोलना ही योग है

बहुत-से लोग योग को एक-आध घण्टे की कोई क्रिया समझते हैं परन्तु वास्तव में योग तो जीवन के प्रति एक विशेष दृष्टिकोण का अथवा एक श्रेष्ठ जीवन-पद्धति का नाम है। योगी का जीवन, उसका आचार-व्यवहार, उसकी रीति-नीति ही भोगी से अलग, अलौकिक होती है। निस्सन्देह, योग एक अभ्यास, पुरुषार्थ या क्रिया-विशेष का भी नाम है परन्तु योग अपने समूचे जीवन को न्यारा और प्यारा बनाने की एक कला को अथवा जीवन के एक दिव्य विधि-विधान को भी कहते हैं। ऐसे में प्रश्न उठता है कि यदि हम संक्षेप में जानना चाहें तो आखिर योग क्या है?

इस बात को हम कुछेक उपमाओं तथा उदाहरणों द्वारा स्पष्ट करते हैं। हम पहले 'कमल' की ओर ध्यान आकर्षित करते हैं। कमल गंदले जल, दलदल अथवा कीचड़ में पैदा होकर भी उससे सदा ऊँचा उठा रहता है। वह अपने जन्म-स्थान की सभी अशुद्धियों से बचकर रहता है। वह निर्मल और प्रिय लगता है। जीवन की ऐसी विधि ही योगी की विधि है। योगी भी इस संसार में रहते हुए इससे ऊपर उठकर रहता है। वह यह नहीं कहता कि यहाँ का वातावरण ही दूषित है तो मैं इससे कैसे बचा रह सकता हूँ? वह यह नहीं सोचता कि यहाँ तो लोभ, क्रोधादि के बिना काम ही नहीं चल सकता; तब मैं इनसे अछूता कैसे रह सकता हूँ? बल्कि उसका दृष्टिकोण यही बना रहता है कि मुझे तो इन अशुद्धियों से बचकर रहना है, कमल-सम जीवन बनाना है। वह बुराई को देखकर उससे प्रभावित नहीं होता बल्कि स्वयं को निर्मल बनाये रखता है।

दूसरा उदाहरण हम नेत्र का लेते हैं। नेत्र से मनुष्य दिन-भर में पदार्थ, वस्तुयें, व्यक्ति देखता है। मनुष्य की आँखें इस जहान को देखने का साधन हैं। आँखें खुली हों तो मनुष्य प्रकृति के इस जगत् का जल-थल, नदी-नाले, बाग़-बग़ीचे, पहाड़-पहाड़ी सभी देखता है। परन्तु मनुष्य को मालूम नहीं है कि उसका तीसरा चक्षु बन्द है। **उस दिव्य नेत्र के खुल जाने से जीवन-पथ स्पष्ट दिखाई देगा और अपना लक्ष्य भली भाँति प्रगट हो जाएगा। उस नेत्र से आत्मा और परमात्मा, सूक्ष्म लोक और परलोक का भी दर्शन हो जायेगा। यह नेत्र (ज्ञान नेत्र) ज्ञान द्वारा ही खुलता है। यह उसे प्राप्त होता है जो भृकुटि में वास करने वाली आत्मा को जागृत करता है।**

स्वयं को 'आत्मा' निश्चय कर, मन रूपी चक्षु से परमधाम के वासी को देखना ही योग है। जो इस प्रकार परमपिता पर अपनी दृष्टि रखता है, उसका अपने कर्मों की श्रेष्ठता पर ध्यान रहता है। उसे यह याद रहता है कि आखिर मैं ने उसी परमपिता के पास जाना है और इसलिए (जैसे वह परम पवित्र है, वैसे ही) मुझे भी पवित्र बनना है। उसकी मनोदृष्टि परमात्मा पर होने से उसकी वृत्ति, स्थिति और कृति भी अलौकिक हो जाती है।

इस प्रकार, योगी का मन आलोकित हो उठता है। उसके मन का अज्ञानान्धकार मिट जाता है। उसका आत्मा रूप दीपक जग उठता है। उसे एक नये जीवन का अनुभव होता है, जो जगमग-जगमग कर उठता है। न केवल स्वयं को एक शीतल, शान्तिमय चाँदनी-सी अथवा ऊषा-सम शक्तिवर्धक प्रकाश में वह अनुभव करता है बल्कि सदा जागती ज्योति परमात्मा के संसर्ग द्वारा स्वयं एक जगा दीपक होकर, अपने सम्पर्क में आने वाले जन-मन को भी प्रकाश-युक्त करता है; वह अपने चहुँ ओर प्रकाश और शान्ति बिखेरता है।

★★★

अमृत-सूची

नष्टोमोह:, नष्टोघृणा

यह मनोवैज्ञानिक तथ्य है कि जैसे पानी ढलान की ओर सहजता से बहता है उसी प्रकार मानवीय मन भी राग और द्वेष के ढलानों की ओर बिना प्रयास के ही बहता है। इसलिए चिन्तकों ने कहा है – हे मानव! राग और द्वेष दोनों की तरफ बहने से मन को रोक। राग मोह है और द्वेष घृणा है। संसार में यदि किसी को किसी से घृणा है तो उसका किसी से राग भी ज़रूर होगा। जैसे तराज़ू के एक पलड़े में यदि ज़्यादा भार हो तो दूसरा स्वत: ऊपर उठ जाता है, इसी प्रकार, किसी के मोह में मन झुका होगा तो अवश्य ही किसी के प्रति नफ़रत के कारण बहुत अकड़ा हुआ भी होगा। राग और द्वेष से मुक्त होकर ही व्यक्ति समदर्शी बन सकता है। ये दोनों भाव पक्षपाती बनाते हैं। राग के कारण एक को पात्रता से ज़्यादा दिया जाता है और नफ़रत के कारण अन्य को पात्र होते भी वंचित रखा जाता है। इसलिए कहा गया है कि मोह और घृणा ही संसार में सर्व दु:खों का मूल कारण हैं।

आध्यात्मिक पुरुषार्थ का अन्तिम लक्ष्य है मोह को नष्ट करके स्मृतिलब्धा बनना अर्थात् ईश्वरीय स्मृति में लीन हो जाना। शरीर, सम्बन्ध, पदार्थ, नाम, मान, शान सभी से उपराम होकर राम की स्मृति में खो जाना। परन्तु इस स्थिति की प्राप्ति में मोह रूपी जाल जितना मानव को फँसाता है, घृणा भी उतनी ही मोटी दीवार बन कर रुकावट डालती है। किसी के प्रति घृणा पैदा हो जाती है तो मोह स्वत: टूट जाता है परन्तु फिर भी मानव स्मृतिलब्धा नहीं बन पाता क्योंकि पहले जो स्मृति मोह रूप थी अब वो घृणा रूप हो गई पर ईश्वर-स्वरूप नहीं बनी। यह एक विकार का दूसरे विकार के साथ प्रतिस्थापन तो हो गया परन्तु उन्मूलन नहीं हुआ। जैसे यदि कोई शेर को सामने देख कर, उससे बचने के लिए गड्ढे में कूद जाए तो वह शेर की हिंसा से तो बच जाता है परन्तु गड्ढे में गिरने से दूसरी हिंसा का शिकार हो जाता है। इसी प्रकार, मोह से बचने के लिए घृणा को पाल लेना भी स्मृति स्वरूप बनने का सही रास्ता नहीं है।

मोह और घृणा दोनों ही कड़े विकार हैं। ये दोनों एक-दूसरे से वैसे ही दूरी बनाए रखते हैं जैसे कि चुम्बक के दोनों ध्रुव। एक की उपस्थिति में दूसरा हो ही नहीं सकता अर्थात् जहाँ मोह होता है वहाँ घृणा नहीं होती, जहाँ घृणा होती है वहाँ मोह नहीं होता परन्तु ये हैं दोनों घातक और पातक। इन दोनों नकारात्मक भावों की उत्पत्ति का कारण है देह-अभिमान। देह की स्मृति से मानव कुछ के प्रति पसन्द और कुछ के प्रति नापसन्द उत्पन्न कर लेता है। जिनको पसन्द करता है उनके राग में और जिनको नापसन्द करता है उनके प्रति घृणा में फँस जाता है। यदि वह आत्मिक भाव को दृढ़ता से धारण करे और हर समय इस स्मृति से कार्य-व्यवहार और सम्बन्ध-सम्पर्क में आए कि **हम सभी एक पिता की सन्तान आपस में आत्मिक भाई-भाई हैं, रूप में अजर, अमर, अविनाशी ज्योतिबिन्दु हैं, परमधाम से आए हैं, सृष्टि रंगमंच पर मेहमान हैं और एक साथ पार्ट बजाने वाले सह रंगकर्मी हैं तो इस भावना से देह दृष्टि समाप्त हो जाती है और राग और घृणा के झुकाव और टकराव से सुरक्षा हो जाती है। ऐसा व्यक्ति साक्षीद्रष्टा, समदर्शी, उपराम, सर्वस्नेही, सर्व उपकारी और सर्वप्रिय बन जाता है।**

जिस प्रकार से काम सँवारने वाले, रुकावटें हटाने वाले से मोह हो

जाता है, इसी प्रकार, काम बिगाड़ने वाले, रास्ते में रोड़े अटकाने वाले, अपमान करने वाले, नुकसान करने वाले से नफ़रत हो जाती है। मानव-मन को, जिसके प्रति मोह होता है उसकी याद आती है और जिसके प्रति घृणा या दुश्मनी होती है उसकी भी बहुत याद आती है। जिससे घृणा पैदा हो जाए तो उसके प्रति जोश और रोष पैदा होता रहता है। उसको देखते ही संकल्पों में उबाल-सा आ जाता है। भगवान के बदले उस व्यक्ति की तस्वीर दिल दर्पण पर छा जाती है। **परन्तु विचार कीजिए, जिसको हम दुष्ट कहते हैं, खराब कहते हैं, जिसके चेहरे को देखना भी नहीं चाहते हैं, यदि सामने पड़ जाए तो मुख भी फिरा लेते हैं, कई बार रास्ता भी बदल लेते हैं फिर भी उसे याद क्यों करते हैं? जब स्थूल आँखों के सामने उसे आने देना नहीं चाहते हैं तो मन की आँखों से उसे क्यों देखते हैं? किसी को बुरा समझना पाप है, फिर भी यदि वह सचमुच बुरा है तो उसे बार-बार याद करना उससे भी बड़ा पाप है और उसके कारण भगवान को भूलना उससे भी बड़ा पाप है।**

हमें याद रखना चाहिए कि हमारा कोई शत्रु नहीं है। शत्रु तो पाँच विकार हैं और कोई मित्र नहीं है, मित्र तो सद्गुण हैं। हमने जो अच्छे या बुरे कर्म किए हैं वे ही समय के साथ-साथ हमारे सामने आते जाते हैं। यदि हमने कोई गलत कर्म इस जन्म में या पिछले जन्म में किया ही नहीं है तो हमारा कोई कुछ बिगाड़ ही नहीं सकता। किसी भी परिस्थिति में ठीक होकर निकलेंगे। भगवान हमारी मदद करेगा। हमारे अच्छे कर्म कोई-न-कोई ऐसा रास्ता निकाल देंगे जिससे हम सुरक्षित निकल जायेंगे। निमित्त चाहे कोई बने परन्तु नुकसान का मूल कारण हैं हमारे बुरे कर्म। आज एक निमित्त बनता है, कल दूसरे नुकसान के लिए दूसरा निमित्त बन सकता है। इसलिए सबके प्रति शुभ सोचना और अपने कर्मों को सुधारना जीवन का आधारभूत सिद्धान्त होना चाहिए। यह दृढ़ निश्चय करें कि हमें किसी का स्वप्न मात्र भी बुरा सोचना ही नहीं है।

घृणा की बात देखने में भले ही छोटी है परन्तु है बड़ी भारी। कुछ दिन पहले समाचार-पत्रों में समाचार आया था कि चलती ट्रेन में सिगरेट के एक छोटे-से टुकड़े से ऐसी आग धधकी कि कई करोड़ का सामान और कई व्यक्ति कोयले की तरह जल गए। इसी प्रकार घृणा रूपी चिंगारी भी पुण्य कर्मों को, मन की मिठास को, ज्ञान के प्रकाश को राख कर देती है। **जैसे भगवान की याद से पाप कर्म भस्म होते हैं, वैसे ही घृणा से सुकर्म भस्मीभूत हो जाते हैं। इसलिए नष्टोमोहा के साथ-साथ नष्टोघृणा बनना भी जरूरी है, तभी स्मृतिलब्धा बनेंगे।**

– ब्र.कु. आत्म प्रकाश

गुणदान

ज्ञान-दान के साथ-साथ गुण-दान का भी बहुत महत्त्व है। गुणों की महादानी आत्मा कभी भी किसी के अवगुण को देखते हुए, धारण नहीं करेगी। किसी के अवगुण के संगदोष में नहीं आयेगी। और ही गुणदान द्वारा दूसरे का अवगुण, गुण में परिवर्तन कर देगी। जैसे धन के भिखारी को धन दे सम्पन्न बना देते हैं ऐसे अवगुण वाले को गुण दान दे, गुणवमूर्त बना दो। जैसे योग दान, शक्तियों का दान, सेवा का दान प्रसिद्ध है, तो गुण-दान भी विशेष दान है। गुण-दान द्वारा आत्मा में उमंग-उत्साह ही झलक अनुभव करा सकते हो।

पवित्र धन एवं मातेश्वरी सरस्वती

– ब्रह्माकुमार रमेश शाह, गामदेवी (मुम्बई)

महाभारत में एक प्रसंग है कि जब कुरुक्षेत्र के मैदान में कौरवों-पाण्डवों की सेना युद्ध के लिए आमने-सामने खड़ी थी और शंख-ध्वनि के बाद युद्ध आरम्भ होने ही वाला था, तो उस समय पाण्डवों के ज्येष्ठ भ्राता युधिष्ठिर रथ से उतरे और नंगे पैर कौरव सेना की ओर जाने लगे। वे भीष्म पितामह और आचार्य द्रोण के पास जाकर उनके पांव पड़े और उनसे आशीर्वाद मांगते हुए कहने लगे कि शास्त्रों के अनुसार युद्ध के पहले बड़ों की स्वीकृति और आशीर्वाद ज़रूर लेना चाहिए। आशीर्वाद देते समय भीष्म पितामह और द्रोणाचार्य ने अपनी लाचारी बताते हुए कहा - अर्थस्य पुरुषो दासो, दासस्त्वर्थो न कस्यचित् अर्थात् इन दोनों गुरुजनों ने धन के विषय में वास्तविकता बताई कि हम पैसे के दास हैं परन्तु पैसा किसी का दास नहीं है। ये उद्‌गार महाभारत के समय के संसार की करुण स्थिति दर्शाते हैं। अभी शिव बाबा ने बताया है कि महाभारत काल माना ही कल्प का संगमयुग। इस समय सब पैसे के गुलाम हैं और पैसे को किसी ने अपना गुलाम नहीं बनाया है। ये इस समय के संसार की वास्तविकता है।

ऐसे समय पर मातेश्वरी जी ने विश्व के इतिहास में एक उदाहरण बनकर दिखाया। मातेश्वरी जी एक साधारण परिवार में जन्मी और इस ईश्वरीय परिवार में करीब 18 वर्ष की छोटी-सी आयु में आई तथा अपने तीव्र पुरुषार्थ द्वारा उन्होंने पैसे की गुलाम न बनकर, पैसे को गुलाम बनाकर दिखाया अर्थात् पैसे का सम्पूर्ण मालिक बनकर दिखाया अर्थात् परमपिता परमात्मा के द्वारा स्थापित सतयुगी विश्व की प्रथम महारानी श्रीलक्ष्मी बनने का सौभाग्य प्राप्त किया। ये कितना महान पुरुषार्थ है!

इनके जीवन से यही सिद्ध होता है कि श्रीलक्ष्मी पद केवल स्थूल धन के आधार पर नहीं मिलता है अर्थात् श्रीलक्ष्मी बनने के लिए धनवान बनना आवश्यक नहीं है। स्थूल धन किसी को नर से श्रीनारायण और नारी से श्रीलक्ष्मी नहीं बना सकता है। **श्रीनारायण या श्रीलक्ष्मी पद की प्राप्ति के लिए ज्ञान-योग की पढ़ाई, दैवी गुणों की धारणा, विश्व की सर्व आत्माओं की सेवा तथा शासकीय (Administrative) योग्यता की आवश्यकता होती है। पहाड़ जैसी समस्यायें आयें तो भी सत्य बात पर अटूट विश्वास, दृढ़ निश्चय, परमात्मा पर स्थिर श्रद्धा और निश्चय तथा समस्याओं का समाधान करने का गुण चाहिए। अपने जीवन से मातेश्वरी जी ने ये सिद्ध करके दिखाया और एडवान्स पार्टी का अधिनायक भी बन कर दिखाया।** इस प्रकार वे उज्ज्वल भविष्य बनाने के निमित्त बनीं। श्रेष्ठ धारणाओं से श्री लक्ष्मी जैसा सर्वश्रेष्ठ पद प्राप्त हो सकता है, यह मातेश्वरी जी ने अपने जीवन से सिद्ध करके दिखाया।

ब्रह्मा बाबा से मेरी कई बार बात हुई और मैंने ब्रह्मा बाबा को कहा - आप तो 83वें जन्म में भी हीरो एक्टर थे। आपके पास विशाल अनुभव था, स्व-पुरुषार्थ से कमाई हुई विपुल धन-सम्पदा थी और अब 84वें जन्म में आपके तन में सर्वशक्तिवान परमपिता परमात्मा की प्रवेशता है, परमात्मा ने आपके तन को अपने रथ के रूप में निमित्त बनाकर जो सौभाग्य प्रदान किया उससे भी आपको बहुत कमाई हो रही है, इसलिए मैं आपको तो सम्पूर्ण रूप से फॉलो नहीं कर सकता हूँ क्योंकि आप अति महान हैं और महान बनेंगे। आप हीरो एक्टर थे, हैं और बनेंगे। हमारा भूतकाल और वर्तमान आपके जैसा महान नहीं है, फिर भी हमको अपना भविष्य श्रेष्ठ बनाना है इसलिए मेरा आदर्श मातेश्वरी जी ही हैं। मातेश्वरी जी हमारे जैसे साधारण परिवार की हैं और पढ़ाई भी साधारण की है फिर भी अपने पुरुषार्थ से विश्व की प्रथम श्रीलक्ष्मी बनने का सौभाग्य प्राप्त किया इसलिए उनको फॉलो करना हमारे लिए सहज है। तब ब्रह्मा बाबा हँस कर कहते थे कि मम्मा अपने तीव्र पुरुषार्थ से हम सबसे आगे निकल गई।

मम्मा की धारणायें इतनी महान थीं कि उनका वर्णन करना हमारी वाणी से परे की बात है और लिखना हमारी लेखनी से परे है फिर भी हमने उनके सान्निध्य में जो सीखा, उसमें से कुछ का सेवार्थ यहाँ वर्णन करते हैं। मातेश्वरी जी की वाणी इतनी सुन्दर, मधुर और स्पष्ट थी कि सुनने वाले के दिल में वह घर कर लेती थी। उनकी वाणी को सुनकर एक बार मैंने मातेश्वरी जी से पूछा कि आप कैसे इतनी अच्छी वाणी चलाते हो, आप उसके लिए क्या पूर्व तैयारी करते हो ? तब मातेश्वरी जी ने सहज स्वभाव से बोला- ''मैं यही पूर्व तैयारी करती हूँ कि स्टेज पर बैठते ही बाबा को याद करती हूँ और बाबा को कहती हूँ कि बाबा ये तन आपका है, बुद्धि आपकी है और जो सामने बैठे हैं, वे आपके बच्चे हैं। उनको क्या चाहिए, वह हमको पता नहीं है। आप त्रिकालदर्शी हो, इसलिए आप मेरे मुख से वही वाणी चलाना जिसकी सामने वालों को ज़रूरत हो। ये संकल्प करके मैं संदल पर बैठकर वाणी चलाती हूँ और आगे का काम बाबा करता है।'' मातेश्वरी जी का ये अनुभव सुनने के बाद मैंने भी उनको फॉलो करने का पुरुषार्थ किया। उससे पहले मैं एक विद्वान की तरह अपना भाषण तैयार करता था क्योंकि मैंने सुना था कि चर्चिल, जो इंग्लैण्ड का प्रधान मन्त्री था, वह न केवल अपना भाषण तैयार करता था किन्तु ड्रामा के एक्टर की तरह आईने के सामने खड़े होकर उसकी रिहर्सल भी करता था। परन्तु जब मैंने मातेश्वरी जी का अनुभव सुना तो यह पूर्व तैयारी करना छोड़ दिया और मैं बाबा को याद कर संदल पर बैठता हूँ और बाबा को कहता हूँ कि इस सभा में बैठे लोगों की जो भावनायें हों, उनके जो प्रश्न हों, उनका यथोचित उत्तर उनको मिल जाये, ऐसी वाणी मुख से निकले, ऐसा बल हमको देना। मातेश्वरी जी के अनुभव से मेरे जीवन में परिवर्तन हो गया।

एक सेवाकेन्द्र पर भट्ठी थी और वहाँ हमको क्लास कराने के लिए कहा गया। मैंने शिव बाबा को याद किया और कहा - बाबा, मैं ऐसा निमित्त बनूँ कि इस क्लास को जो चाहिए, वे ही शब्द मेरे मुख से निकलें। क्लास के बाद एक भाई ने मेरे पास आकर कहा - रमेश भाई, मैंने अपनी क्लास टीचर बहन जी को कुछ प्राइवेट बातें बताई थीं और उनको कहा था कि ये आप और किसको भी नहीं बताना। फिर भी उन्होंने आपको मेरी बातें बता दीं और आपने उन पर आज क्लास कराया, तो बहन जी ने ऐसा क्यों किया ? तब मैंने उसको यही कहा - आप निश्चिन्त रहो, आपकी टीचर बहन ने मुझको कुछ नहीं बताया है, मैंने तो शिव बाबा को याद करके क्लास कराया है और शिव बाबा ने हमको निमित्त बनाकर आपकी समस्या का समाधान कराया। ये सुनकर वह भाई शान्त हो गया। मातेश्वरी जी की वाणी से अनुभव होता था कि जैसे उनकी वाणी से अनेकों को अपने प्रश्नों का स्वत: उत्तर और समाधान मिल रहा हो।

हम सब तो माया के तूफानों के वशीभूत हो जाते हैं और हमारी अवस्था अंगद के समान स्थिर नहीं रहती है परन्तु मातेश्वरी जी सदा अचल-अडोल थीं और उनका विश्वास अटूट था। मातेश्वरी जी का, ब्रह्माकुमारी बनने से पहले लक्ष्य था कि मैं भक्त शिरोमणि मीरा के समान कोई ऐसा कर्त्तव्य करके जाऊँ, जो जाने के बाद भी लोग मुझे याद करते रहें। बाद में मातेश्वरी जी ने प्रभु के प्रति अपना जीवन समर्पण कर दिया और सदा उनमें अटूट श्रद्धा और विश्वास कायम रखा। भक्ति में परमात्मा से अप्रत्यक्ष फल मिलता है और ज्ञान मार्ग में परमात्मा हमसे प्रत्यक्ष में मिला है तो एक का लाख क्या पदमगुणा देने को तैयार है, फिर भी हम कहाँ इतने निश्चयबुद्धि हैं, जो हम अपने धन को पूर्णरूपेण प्रभु-अर्पित करके सफल करें। आज विनाश सामने है। विश्व की स्थिति को देखते हुए विश्व बैंक जैसी अन्तर्राष्ट्रीय संस्था ने भी यह माना है कि अभी घोर आपत्ति का समय आने वाला है। इतनी सूचना मिलते भी हम कहाँ अपने तन-मन-धन को सफल कर रहे हैं? हम महादानी और वरदानी बनकर सर्वस्व सफल कर रहे हैं या नहीं, यह हमें देखना है ?

मातेश्वरी जी के जीवन से यही सीखने का है कि परमात्मा जैसे चलाये वैसे चलना चाहिए। उसकी मत पर अपने तन-मन-धन को सफल कर सफलतामूर्त बनना चाहिए। श्रीलक्ष्मी बनने के लिए बहुत लौकिक पढ़ाई की भी आवश्यकता नहीं है किन्तु ईश्वरीय पढ़ाई और श्रेष्ठ धारणाओं के आधार पर ऐसा श्रेष्ठ पद पा सकते हैं। ईश्वरीय पढ़ाई और लौकिक पढ़ाई की प्राप्ति में क्या अन्तर है, वह भी मातेश्वरी जी ने सिद्ध करके बताया।

बीमारी के समय भी हमारी अवस्था कैसी रहे, वह भी मातेश्वरी जी ने अपने जीवन से सिद्ध कर बताया। बीमारी के समय हम बीमारी का स्वरूप बन जाते हैं अर्थात् बीमारी हमारी मालिक बन जाती है, हम बीमारी के गुलाम बन जाते हैं। कलियुग में जैसे सब लोग पैसे के गुलाम हैं, वैसे ही बीमारी के भी गुलाम बन जाते हैं। किन्तु मातेश्वरी जी बीमारी के समय भी अपनी कर्मेन्द्रियों की मालिक बनकर रहीं। मम्मा का ऑपरेशन करने वाले डाक्टर ने मुझसे कहा था कि मेरे 40 वर्ष के डॉक्टरी जीवन का ये सर्वश्रेष्ठ पेशेन्ट है। उसने बताया था कि इस बीमारी के कारण असहनीय शारीरिक पीड़ा होती है परन्तु मातेश्वरी जी के मुखमण्डल पर बीमारी की कोई छाया दिखाई नहीं देती है। इस तरह हमारे पास भी अगर कोई बीमारी आये तो उसे वश में करना, मातेश्वरी जी के जीवन से सीखना चाहिए।

परमात्मा सत्य है, ड्रामा भी सत्य है और सत्य पिता की रचना सतयुग भी सत्य है। सत्यता के आधार पर ही सतयुग की रचना होती है और यह विश्व विद्यालय भी सत्यता और पवित्रता की शक्ति के आधार पर ही चल रहा है। भारत सरकार के राष्ट्र-चिन्ह (Coat of Arms) त्रिमूर्ति पर भी लिखा है - ''सत्यमेव जयते''। मातेश्वरी जी ने सत्यता को निर्भय होकर दुनिया के सामने सिद्ध किया। एक बार मुम्बई में एक कार्यक्रम होने वाला था, उसमें ऊषा को एक गीत गाना था। उसकी तर्ज ऊषा को नहीं आती थी। उस समय मातेश्वरी जी का टॉन्सिल का ऑपरेशन हुआ था इसलिए डाक्टर ने उनको बोलने से मना किया था। फिर भी मातेश्वरी जी ने उस गीत की एक लाइन ''चढ्यो रे मोहे आज अलौकिक रंग'' गाकर सुनाई। मातेश्वरी जी उस समय उस गीत के शब्दों की स्वरूप बन गई जिससे लगता था कि मातेश्वरी जी पर ऐसा अद्भुत अलौकिक रंग चढ़ा हुआ है।

हमारा मुखड़ा भी ऐसा दर्पण हो जाये कि हम भी उस गीत की दो लाइनों को गाकर अपने ऊपर चढ़े हुए अलौकिक रंग की अनुभूति सबको करायें जिससे सभी ऐसा अलौकिक रंग चढ़ाने वाले पारलौकिक परमपिता परमात्मा की अनुभूति करें और उन सब पर भी ऐसा अलौकिक रंग चढ़ जाये। ये भावनाएँ ही, मातेश्वरी जी को अर्पित मेरे और ऊषा जी के सच्चे श्रद्धा सुमन हैं। ☆☆☆

'पत्र' सम्पादक के नाम

ज्ञानामृत पत्रिका पढ़ कर दिल बागोबहार हो जाता है। मैं अल्लाताला से दुआ करता हूँ कि वह आपकी पत्रिका को दिन दूनी रात चौगुनी तरक्की दे। आमीन। अप्रैल माह की पत्रिका में 'खुशी जैसी खुराक नहीं', 'आइये बनें क्रोध मुक्त', 'न हो निराश, जब तक है श्वास', 'त्याग की शक्ति', 'ईश्वर की याद से लाभ' बहुत ही दिल को छू लेने वाले लेख हैं। मैं सभी लेखकों का आभारी हूँ।

– अ. अजिज शेख, धुलिया

मैं ज्ञानामृत का नियमित पाठक हूँ। पहले की अपेक्षा अभी के लेख विशेष प्रभावकारी महसूस हो रहे हैं। 'बात एकता की', 'मेरी ही परीक्षा क्यों?', 'चमत्कारी अनुभूति' और 'भूल छोटी-छोटी, भार भारी-भारी' विशेष आकर्षक लगे। ज्ञान-रस से भरे ज्ञानामृत के सभी लेख और कविताएँ बहुत मीठे लगते हैं। ऐसे ही सचित्र सेवा समाचार भी मन-बुद्धि को मोह कर संस्कार परिवर्तन का महान कार्य करते महसूस होते हैं। सच है - ''चित्र देखने से चरित्र बदलते हैं''।

– ब्र.कु. धर्मनाथ प्रसाद, पटना

'ज्ञानामृत' मासिक द्वारा हमें सदैव बहुत विद्वदजनों के नये-नये विचार और अनुभवों के हीरे-मोती प्राप्त होते रहते हैं। यह नि:संदेह सर्वश्रेष्ठ पत्रिका है। इसमें छपे प्रत्येक लेख, प्रत्येक कविता तथा संपादकीय से हमें कई प्रेरणायें प्राप्त होती हैं जिससे हम ज्ञानमार्ग पर सहज ही आगे की ओर बढ़ते रहते हैं। ज्ञानामृत के सभी प्रबुद्ध रचनाकारों को हार्दिक अभिनन्दन। फरवरी व मार्च 04 के अंक में 'आत्मा, पुनर्जन्म और मृत्यु पर वैज्ञानिक शोध' विषयक लेख द्वारा ज्ञानामृत के पाठकों के साथ अपने अनुभव बाँटने के लिए डॉ. हंसा रावल जी का बहुत-बहुत धन्यवाद। इन लेखों ने आत्मा, परमात्मा संबंधी चिंतन की धारा को उच्चतम अवस्था तक ले जाने में सहयोग दिया। प्रो. शरद नारायण खरे जी की कविता भी बहुत सुन्दर लगी।उनके कई उच्चकोटि के लेख मैंने अन्य पत्रिकाओं में भी पढ़े हैं। आशा है वे ज्ञानामृत में भी इसी तरह अपनी लेखन कला का उपयोग करके सर्व को लाभान्वित करते रहेंगे।

– ब्र.कु. ऋतु, भोपाल

ज्ञानामृत के मार्च 04 के अंक में 'मेरी ही परीक्षा क्यों?' यह लेख पढ़ कर मैं बहुत-बहुत खुश हुआ हूँ और इस लेख से बहुत कुछ सीखने को मिला। बाबा से हमने प्रतिज्ञा की है - 'दुनिया बदल जाये, चाहे काँटों पर सोना पड़े, चाहे मौत स्वीकार करनी पड़े, तेरा हाथ और साथ कभी नहीं छोड़ेंगे, बाबा। कोई भी परीक्षा, परिस्थिति आये उसे स्वीकार करके दृढ़ निश्चय से पार करना ही है।' ज्ञानामृत ज्ञान सागर है, नये-नये लेख, अनुभव पढ़ने को मिलते हैं। यह मेरे लिए संजीवनी बूटी है।

– ब्र.कु. अनिल ढगे, मोखड

दिल्ली के बड़े पुस्तकालय में लेख लिखने के सिलसिले में बहुत महत्त्वपूर्ण पुस्तकें सन्दर्भ विभाग से देख रहा था कि अचानक आपकी मासिक पत्रिका हाथ में आई। पढ़ना प्रारम्भ किया तो पढ़ता ही गया। आपका कहना शाश्वत सत्य है कि पहले क्रोध शान्त करो, अपने आपको पहचानो। अब लोग आपकी बातों को पहचान कर, आपका अनुसरण कर रहे हैं। आप समाज को दिशा दे रहे हैं। यह सराहनीय एवं समाजहित कार्य है।

– विशाल कुमार जैन, देहली

मुझे ज्ञानामृत का फरवरी 04 का अंक भेंट स्वरूप मिला। ज्ञानामृत के लेखों को पढ़ने से आपके संगठन के लक्ष्य और आधार का वास्तविक बोध हुआ। 'परमात्मा और हम आत्माएँ ही श्रेष्ठकाल और परिस्थितियों का निर्माण कर सकते हैं, यह सनातन सत्य है।' संगठन और संगठनकर्त्ताओं के महत्त्व पर प्रकाश डाल कर आपने मुझे जो ऊर्जा प्रदान की उसके लिए आभारी हूँ। अन्य लेख भी सरल भाषा में, ओजपूर्ण शैली में, दुष्प्रवृत्तियों के उन्मूलन और श्रेष्ठ प्रवृत्तियों के संवर्धन में सहायक हैं। इस पत्रिका के प्रचार और प्रसार का कार्य भी मेरा अपना है। ईश्वर के साथ भागीदारी में यह अच्छा अवसर सिद्ध होगा। गायत्री परिवार के साहित्य के वितरण का कार्य भी मैं करता हूँ परन्तु इस ग्रामीण अंचल में ज्ञानामृत पत्रिका की अपनी उपयोगिता है।

– बलराम शुक्ल, इलाहाबाद

खुदा खुद आया है

– ब्रह्माकुमार मलखान सिंह, बराना (पानीपत)

मेरा लौकिक जन्म जिला पानीपत के गाँव बराना में एक अच्छे ज़मींदार घराने में हुआ। पिताजी को मेरी प्राप्ति, उनकी काफी उम्र गुजर जाने के बाद हुई इसलिए मेरा पालन-पोषण भी हाथों पर हुआ। पाँच-छ: वर्ष का होने पर मुझे जो भी प्यार से गोद में उठाता या सम्पर्क में आता तो यही शिक्षा देता कि तुम्हारे पिता ने सन्तान की कमी का बहुत दु:ख देखा है लेकिन अब तुम अपने पिता की इतनी सेवा करना कि पिछले सभी दु:ख भूल जायें। यह बात मेरे दिल में घर कर गई और मैं मन-ही-मन प्रतिज्ञा करता था कि अपने पिता की सेवा के लिए कुछ भी करना पड़े, सहना पड़े, मैं सेवा ज़रूर करूँगा और अपने माता-पिता का आज्ञाकारी होकर रहूँगा।

माता-पिता धार्मिक विचारों के होने के कारण मुझे धार्मिक कहानियाँ सुनाते थे जिनको सुन कर मुझे बड़ा आनन्द आता था। पिताजी जब रामायण की बातें सुनाते तो मैं राम जैसा बनने की सोचता। जब महाभारत की कहानी सुनाते तो मैं युधिष्ठिर जैसा बनने की सोचता। मैं बचपन से ही भक्ति के रंग में इतना रंग गया था कि सुबह आँख खुलते ही चारपाई पर ही बैठा-बैठा लगभग आधा घण्टा भगवान की वन्दना करता कि हे परमात्मा, मैं आपका आभारी हूँ, आप का शुक्रिया करता हूँ लेकिन मैं बालक हूँ, नादान हूँ, नासमझ हूँ इसलिए मुझे अन्धकार से निकाल प्रकाश में ले आओ, सब बुराइयों से हटा कर अच्छाइयों की ओर ले चलो। मुझे अज्ञानता से ज्ञान की ओर तथा जहर से निकाल अमृत की ओर ले चलो। इस संसार रूपी मेले को मुझे अपनी गोदी में बिठा कर दिखाओ। कहीं माया के बाजार में विचलित होकर मैं जीवन बरबाद न कर लूँ। मुझे गोदी से नीचे न उतारना। जो चीज आपको अच्छी लगे वही मुझे देते रहना, जो कर्म आपको अच्छा लगे वही मुझसे कराते रहना। प्रतिदिन ऐसी बातें करता और पृथ्वी पर पैर रखने से पहले पृथ्वी को नमस्कार करता, फिर आकाश, सूर्य, चाँद, जल, अग्नि, वायु, गंगा, यमुना आदि को नमस्कार करता, फिर चारों तरफ घूम कर तैंतीस करोड़ देवी-देवताओं को नमस्कार करने के बाद कहता कि हे संसार के समस्त प्राणियो, मेरे द्वारा पिछले जन्मों में जाने-अनजाने किसी को भी कोई दु:ख दिया गया हो तो मैं उसकी क्षमा माँगता हूँ, मुझे माफी देना। जब भी भोजन करता तो परमात्मा का शुक्रिया करता कि हे परमात्मा, आपने मुझे भोजन दिया है, मैं इसे स्वीकार करता हूँ और हे भगवान, संसार की सभी आत्माओं को पर्याप्त मात्रा में भोजन देना। रात को बिस्तर पर लेट कर काफी देर तक राम का नाम लेता, गायत्री मन्त्र जपता और परमात्मा का शुक्रिया करते-करते सो जाता था।

सुबह चार बजे उठ कर, स्नान आदि करके, धूप-दीप जगा कर, दुर्गा सप्तशति के तेरह अध्याय, कई मन्त्र तथा स्तोत्र पढ़ कर और सभी आरतियाँ करके ही भोजन करता। शाम को सात बजते ही सभी ज़रूरी से ज़रूरी काम छोड़ कर भी मन्दिर में पहुँच जाता था। मन्दिर में सभी देवताओं की आरती उतारता और कुछ समय बैठ कर माता (देवी) से मीठी-मीठी बातें करता और सोमवार, मंगलवार, शुक्रवार, शनिवार, एकादशी और चाँदनी आठम को व्रत ज़रूर रखता था। माता में मेरा अटूट विश्वास था और कठिन-से-कठिन कार्य माता की सच्ची याद में करने से वह निर्विघ्न पूरा होता था। मैं हर वर्ष गंगा स्नान व चण्डी माता और मनसा माता के दर्शन करने अवश्य जाता था।

बड़ा होकर मैं बी.जी.एम. (डाक विभाग) के पद पर नियुक्त

हो गया। मैंने एक जगह खरीद कर अपना रहने का मकान बनाया। एक कमरे में अपना पोस्ट ऑफिस खोल दिया। इस मकान के एक तरफ कृष्ण का मन्दिर है और दूसरी तरफ ब्रह्माकुमारी आश्रम है। लेकिन मैं ब्रह्माकुमारियों से बहुत कटता था। जब भी वे मिलने आते तो उनकी बात को न सुन कर उनका मजाक उड़ाता था और वे भी कई बार मुझे मजाक के मूड में देख कर रास्ता काट जाते थे। भक्ति मार्ग में मुझे खुशी और प्राप्ति का अनुभव होते हुए भी अन्दर में कई प्रकार के प्रश्न बने रहते थे। कई घटनाएँ मुझे अक्सर याद आती थीं। विद्यार्थी जीवन में एक बार एक सहपाठी ने चार खाली स्थानों में एक ही शब्द भरने के लिए कहते हुए एक पहेली पूछी थी। मेरे दूसरे साथी ने उसमें भरा - खुदा, खुद ही, खुद का प्रचार करने के लिए खुद के तरीके से आता है। यह बात मेरी स्मृति में बैठ गई थी और मैं चिन्तन करता था कि माता का प्रचार तो हम कर रहे हैं लेकिन खुदा का प्रचार करने के लिए तो खुदा को ही आना पड़ता है। एक बार एक बहन ने बालसभा में एक गीत गाया था कि भगवान वायदा करके गए हैं भारत में आने का। यह गीत भी मेरे मन में चलता रहता था और मन कहता रहता था कि जब भगवान वायदा करके गए हैं तो अवश्य ही आयेंगे क्योंकि वे कभी झूठा वायदा नहीं करते।

भक्ति करते-करते मेरे मन में विचार चलता था कि एक माता ने मुझे जन्म दिया है उसके साथ मेरा पिता भी है। लेकिन जिस माता की मैं भक्ति करता हूँ इसके साथ भी मेरा कोई पिता होना चाहिए। यदि पिता नहीं है और यह कुमारी है, तो कुमारी को माता क्यों कहा गया, इसे केवल देवी ही कहना चाहिए था। जब भैरों ने माता का पीछा किया और माता जिस स्थान पर छुपी उस स्थान का नाम गर्भजून क्यों रखा गया और माता उस स्थान पर पूरे नौ महिने ही क्यों रुकी और गर्भजून से चलते ही माता का नाम अर्धकुमारी क्यों पड़ा? जब मैं ऐसे प्रश्नों की गहराई में जाता तो उसी समय मेरे सामने से बिल्कुल सफेद छोटी-सी मोमबत्ती की ज्योति-सी गुजरती थी और खास करके जब भी मैं किसी गलत कार्य जैसे काम, क्रोध, लोभ, मोह आदि में फँस जाता तो वह ज्योति सामने से गुजरती थी और मैं समझ जाता था कि इस कार्य से मुझे कोई रोक रहा है। कई बार तो उस कार्य से मैं रुक जाता था लेकिन कई बार लापरवाही से क्रोध आदि कर लेता था तो बाद में बहुत पछताता था कि यह ज्योति मेरे को रोक रही थी, आगे से मैं इसका ध्यान ज़रूर रखूँगा।

एक बार मेरे को चार-पाँच दिन तक लगातार बुखार आता रहा। मैं शहर से एक हफ्ते की दवाई लेकर गाँव में आ गया और पोस्ट ऑफिस का कार्य करने लगा। कार्य करते-करते विचार आया कि बीमारी ज्यादा हो गई है, बच्चे अभी अपने पैरों पर नहीं खड़े हुए, यदि मुझे कुछ हो गया तो बच्चों का क्या होगा और मैं लिखना बन्द करके थोड़ा गहराई से सोचने लगा तो उसी समय एक लाइट का फरिश्ता-सा मेरी कुर्सी के पास आकर बैठ गई। वह सफेद साड़ी पहने हुए, हृष्ट-पुष्ट शरीर, खुले हुए बाल और बीच की माँग किए हुए थी और मुझे ये शब्द सुनाई दिए कि आपकी भक्ति पूरी हुई, आप चिन्ता मत करो, यह बीमारी आपको सतयुग में ले जाने का कारण बनेगी और यह शीघ्र ही ठीक हो जायेगी। यह कहते ही वह फरिश्ता गुम हो गई। यह बात मुझे बड़ी अजीब-सी लग रही थी कि बीमारी मुझे सतयुग में ले जाने का कारण बनेगी। भक्ति मार्ग में सफेद वस्त्रधारी माता को ब्राह्मणी माता कहते हैं। मैंने घर जाकर बताया कि मुझे ब्राह्मणी माता का साक्षात्कार हुआ और उसने मुझे बताया कि यह बीमारी तुझे सतयुग में ले जाने के लिए आई है और जल्दी ही ठीक हो जायेगी।

शाम के समय $5^1/_2$ बजे जब मैं पोस्ट ऑफिस बन्द करके बाहर

गली में खड़ा हुआ तो उसी समय आश्रम से एक ब्रह्माकुमार भाई निकला और मेरे से बोला - भाई, अब तो खुद खुदा आया हुआ है और वह तुम्हें बुला रहा है। मैं मजाक की स्थिति में बोला - चलो, आज आपके खुदा से भी मिलते हैं। ज्यों ही मैं आश्रम के अन्दर गया तो देखा कि जिस माता का साक्षात्कार हुआ था उसका फोटो सामने दीवार पर लगा हुआ था। मैंने पूछा, यह फोटो किसका है? उसने बताया कि यह मम्मा हैं, जो सरस्वती बन ज्ञान-वीणा बजा रही हैं, ज्ञान की देवी हैं। जो आने वाले सतयुग में राधा के रूप में जन्म लेंगी और स्वयंवर के बाद श्री लक्ष्मी कहलायेंगी। मैंने उसे बताया कि आज दो-ढाई बजे मैंने इनका साक्षात्कार किया और इन्होंने मुझे बताया कि आपकी भक्ति पूरी हो चुकी है और जो आप के शरीर में बीमारी हुई है, यह आपको सतयुग में ले जाने के लिए आई है। दीवारों पर लगे हुए चित्रों को देख-देख मेरा दिल अन्दर-ही-अन्दर बहुत खुश हो रहा था। मुझे सभी चित्रों पर समझाया गया, जैसे-जैसे मैं समझता जा रहा था, वैसे-वैसे मेरे दिल को लगता रहा कि पिछली भूली हुई बातें याद आ रही हैं। पूरी प्रदर्शनी समझने पर मेरे अन्दर कोई संशय व प्रश्न नहीं रहा और उसी दिन, उसी समय साप्ताहिक पाठ्यक्रम का पहला पाठ पढ़ा और मुरली भी सुनी। इस प्रकार, मुझे आश्रम में शाम के 8 बज गए। जब आश्रम से बाहर निकला तो पता चला कि सभी घर वाले बड़े चिन्तित हैं और मुझे ढूँढ़ रहे हैं। मिलते ही वे बोले कि आप कहाँ चले गए थे। मैंने कहा कि सुबह मैंने आखिरी पूजा-पाठ कर लिया था। जिनकी हम पूजा कर रहे हैं वे पिछले जन्मों के हमारे ही चित्र हैं। अब खुदा खुद हमारे लिए आया है, हमें केवल उसी के बतलाए हुए रास्ते पर चलना है। अगली सुबह नित्यकर्म आदि करके मैं आश्रम में ही चला गया। मुरली सुनी और साप्ताहिक पाठ्यक्रम का दूसरा पाठ भी पढ़ा तथा सारी प्रदर्शनी दोहराई। फिर घर जाकर भोजन आदि करके अपने ऑफिस में चला गया। मेरी युगल ने बच्चों को कहा कि तुम्हारा पिता न जाने किस चक्कर में पड़ गया है, चलो, आश्रम चल कर देखते हैं। मेरे सारे परिवार को आश्रम में देख कर निमित्त बहन ने ज्ञान के बारे में काफी देर तक बातें की और प्रदर्शनी के सभी चित्रों पर समझाया। सभी को यह ज्ञान सच्चा लगा और वे भी साप्ताहिक पाठ्यक्रम का पहला पाठ पढ़ कर हँसते, मुस्कराते चेहरों से आश्रम से बाहर निकले और सीधे मेरे पास ऑफिस में ही आ गए। मेरे को कहने लगे कि अब हमारी आँखें खुल गई हैं यह ज्ञान पूर्णतया सच्चा है। मेरे मन में आया –

लाली मेरे लाल की,
जित देखा उत लाल।
लाली देखन मैं गई,
मैं भी हो गई लाल।।

केवल दस दिन तक दवाई खाने के बाद मैं बिल्कुल स्वस्थ हो गया। मेरा दिव्य जन्म हुआ। फिर हम सपरिवार मधुबन बाबा से सन्मुख मिलने गए। वहाँ के वातावरण, सफाई, फुलवाड़ी और सुन्दर स्लोगनों ने मेरे पैर पृथ्वी पर नहीं लगने दिए। जब बाबा से सम्मुख मिल रहे थे तो चेहरे पर खुशी का दीप जल रहा था और आँखों से प्यार की नदियाँ बह रही थीं और दिल गा रहा था कि पाना था सो पा लिया, रहा अब कुछ शेष नहीं। खुदा खुद मिल गया है। मुझे अन्धकार से प्रकाश में, बुराइयों से अच्छाइयों में, अज्ञानाता से ज्ञान में और ज़हर से अमृतकुण्ड में ले आया है। अब भगवान मुझे गोद में बिठा कर संसार की ही नहीं बल्कि तीनों लोकों की सैर करा रहा है। जब से बाबा का बना हूँ, एक दिन भी मुरली मिस नहीं होने दी है। ऐसे बाबा का जितना भी धन्यवाद करूँ थोड़ा है। ज्ञान में मेरा अटूट निश्चय है। अब मेरे पास कोई प्रश्न नहीं है।

☆☆☆

माँ जगदम्बा और नारी सशक्तिकरण

– ब्रह्माकुमारी वीरबाला, लखनऊ

सर्वशक्तिवान परमपिता परमात्मा कलियुग के अन्त एवं सतयुग की आदि के संगम समय पर साधारण मनुष्य तन का आधार लेकर धरा पर अवतरित होते हैं। जिस तन का आधार लेते हैं उसे ब्रह्मा नाम देते हैं। इसी ब्रह्मा मुख द्वारा गीता ज्ञान का उच्चारण होता है। तदुपरान्त ब्राह्मण कुल की स्थापना होती है। परमात्मा सहज ज्ञान और राजयोग द्वारा निर्बल-दुर्बल आत्माओं में शक्ति का संचार करते हैं। उन्हें ज्ञान के अस्त्र-शस्त्र प्रदान करते हैं तथा दिव्य गुणों के अलंकारों से सुसज्जित करते हैं। इन शक्ति रूपा आत्माओं में अग्रगण्य हैं ज़गदम्बा सरस्वती। ये एक ही आत्मा के दो रूपों के दो नाम हैं। वे जगत की अलौकिक माँ भी हैं और दिव्य ज्ञान की अधिष्ठात्री भी। श्वेताम्बरा, वीणावादिनी माँ सरस्वती की सवारी हंस पर दिखाई है, जो उनकी पवित्रता, कोमलता, विवेकशीलता, मधुरता एवं मृदुभाषिता का प्रतीक है। मुझ आत्मा को, साकार में माँ के संग रहने के बहुत मधुर सुअवसर प्राप्त हुए हैं, उन क्षणों की स्मृति, माँ के अनेकानेक गुणों की स्मृति संजोए हुए है। आसुरी प्रकृतियों को ज्वाला बन भस्म कर देने वाली माँ चन्द्रमा की तरह अति शीतल स्वभाव वाली थीं। श्रीमत का पूर्णरूपेण पालन करने वाली माँ अथक सेवाधारी थीं। उनकी बुद्धि की कुशाग्रता एवं हाजिरजवाबी देखते ही बनती थी। अपने सरल स्वभाव के अनुरूप वे किसी भी समस्या का समाधान सहज रूप में कर देती थीं। किसी भी प्रश्न का ऐसा युक्तियुक्त उत्तर देती थीं कि प्रश्न पूछने वाला ही नहीं, दूसरे सुनने वाले भी उनके द्वारा दिये जाने वाले उत्तर पर मोहित हो जाते थे।

बाबा-मम्मा के साथ के अनुभव और उन अनुभवों की यादें अनन्त सुख देने वाली हैं। अन्तर्मुखता की एकाकी दुनिया में शिव बाबा के अतिरिक्त, ब्रह्मा बाबा, मम्मा तथा मधुबन की मधुर यादों के कितने चित्र समाये हैं! उन चित्रों को मैं देखती हूँ और मगन रहती हूँ। सन् 1955 में हमें प्यारे शिव बाबा का परिचय मिला और बाद में हम माँ की अलौकिक गोद के बच्चे बन गये। मधुबन तपोभूमि में जाते रहते और बाप-माँ के साथ का सुख उठाते रहते। प्रारम्भ के उन्हीं वर्षों की बात है, मधुबन में हम ब्रह्मावत्स, माँ जगदम्बा के पास बैठे ज्ञान के मीठे राज़ों से बहल रहे

थे। तभी पता चला कि कोई संन्यासी, बाबा से मिलने आये हैं। मम्मा ने उन्हें अपने पास बुलवा लिया। ''कहिये कैसे आना हुआ'' माँ ने पूछा। ''हम आपके गुरु के दर्शन करने आये हैं'' संन्यासी जी ने कहा। कुशाग्र बुद्धि माँ ने अति सरलता से उनसे कहा - ''हमारा गुरु निराकारी है, उसे तीसरे नेत्र से ही देखा जा सकता है, यदि आपके पास तीसरा नेत्र है तो बेशक आप हमारे गुरु के दर्शन कर सकते हो।''

अभिव्यक्ति, व्यक्ति के आन्तरिक व्यक्तित्व का दिग्दर्शन कराती है। चाहे वह भाषण के द्वारा हो अथवा लेखन के द्वारा। इसलिए कहा गया है "Style is a man" ''शैली ही मनुष्य है''। ओज, प्रासाद एवं माधुर्य से युक्त मम्मा की वाणी से हमें उनकी सरलाता, सहजता एवं वाक्पटुता का परिचय मिलता है।

मानव जीवन को स्पर्श करने वाले प्रत्येक विषय की वे ज्ञान की परिधि में रह कर विस्तृत और सही-सही विवेचना करती थी और समाधान पर प्रकाश डालती थी। नारी सशक्तिकरण विषय उनके सशक्त विचार देखिए–

परमपिता परमात्मा ने आदिकाल में नर और नारी की रचना की। हैं तो दोनों ही उनकी सन्तान। इस समय कलियुग का अन्त है तो जो गिरी हुई आत्माएँ हैं उनको परमात्मा उठाते हैं। इस समय नारी अबला गिनी जाती है इसलिए खासतौर पर नारियों को उठाने के लिए सर्वशक्तिवान परमात्मा ने उन्हें अपनी सेना बनाया है। नारियों को इस समय सर्वशक्तिवान की शक्ति मिलती है जिससे ''भारत माता शक्ति अवतार'' के रूप में नारियों का अविनाशी कार्य सुनिश्चित होता है। जैसे परमात्मा दो रूप रचते हैं - नर और नारी, तो उनको रचयिता कहा जाता है, वैसे ही माता भी नर-नारी दोनों को पैदा करती है। इसलिए माताओं का मर्तबा ऊँचा है। परमात्मा भी माताओं को आगे करता है। जो आदि सनातन मर्तबा था उसे अब प्राप्त कर रहे हैं इसलिए माताओं को बहुत नशा होना चाहिए। इस समय जो नारी गिरी हुई है उसे ताकत मिल रही है। भगवान ने स्वमान दिया है कि हे नारी! तुम्हारे बिना स्वर्ग स्थापना का कार्य हो नहीं सकता। अब तुम्हारे में ताकत आनी चाहिए। नारीपन का भान टूट जाना चाहिए।

परमात्मा द्वारा नारियों में बल संचरण

देवियों का कितना गायन पूजन है, वे भी तो नारी हैं ना। तो बल आना चाहिए कि हम सर्व शक्तिवान की शक्ति बन कर कितने काम कर सकते हैं। शक्तियों के पाँवों के नीचे असुरों के सिर पड़े हुए हैं, यह है शक्ति, जो सर्वशक्तिवान ने प्रदान की। परमात्मा जो शक्ति दे रहे हैं उसे धारण कर अपने कर्त्तव्य में आना है।

शक्तियों के अलंकार और भुजायें

शक्तियों के पास दैवी गुणों के अलंकार हैं और उनकी भुजायें शक्ति की प्रतीक हैं। शक्ति तो सूक्ष्म है, उसे कैसे दिखायें, तो भुजायें और अलंकार देकर ताकत को दिखाया है। हम परमपिता परमात्मा की सन्तान हैं तो उनसे पूरी शक्ति लेनी है। भले ही कोई शक्तियों के चित्रों की पूजा करते हैं, समझते हैं उनसे शक्ति मिल जायेगी परन्तु पूजा से कोई शक्ति नहीं मिलती। हम तो सीधे उस सर्वशक्तिवान से शक्ति ले रहे हैं। सत्य के लिए लड़ने में शक्ति बढ़ती है। अविनाशी शक्ति है, अविनाशी से मिली है, अविनाशी के लिए ही काम में लानी है।

नारियों को चेतावनी एवं जागरुकता का सन्देश

नारियों को अपनी कमजोरियों के ख्यालात छोड़ कर कर्त्तव्य पथ पर स्वयं आगे बढ़ना होगा। श्रेष्ठ मार्ग पर यदि कष्ट भी आयें तो उन्हें सहन करना होगा। 'हम अबला हैं' यह ख्यालात इस समय बिल्कुल निकल जाने चाहिएं। हम आत्मा परमात्मा की सन्तान हैं, इस शक्ति से चलना चाहिए। इसमें सहन भी करना पड़ता है परन्तु जितना-जितना सहन करेंगे उतनी शक्ति आयेगी। जबकि स्वच्छ बन रहे हैं और स्वच्छ बनना ही है तो कितने भी कष्ट आयें, सहन करने ही हैं। पूरा निश्चय नहीं है तो कहीं-कहीं कमज़ोरी आ जाती है। सत्य के लिए सामना करना पड़ता है। निर्विकारी ज़रूर रहना है। पवित्रता नहीं तो सुख-शान्ति को प्राप्त कर नहीं सकेंगे। इसके लिए जो अधिकार नर को है वह नारी को भी है। अपना काम है अपकारी पर भी उपकार करना। आत्मा के पवित्र बनने से संस्कार भी पवित्र बनेंगे। पवित्रता के सिवाय कुछ नहीं है। जबकि निश्चय है कि अब वह सहारा देने वाला आ चुका है तो नारियों को खड़ा हो जाना चाहिए। नारियों के संगठन को बढ़ाना है और उन्हें हिम्मत में ले आना है।

सकारात्मक सोचने की कला

– ब्रह्माकुमारी शीलू, आबू पर्वत

मानव का मन दिन में तो सोचता ही है लेकिन स्वप्न अवस्था में भी विचार चलते ही रहते हैं। मन के विचारों का प्रभाव जीवन पर पड़ता है। बहुत कम लोग इस सत्य पर ध्यान देते हैं। वाणी, कर्म, सम्बन्ध यहाँ तक कि वातावरण भी विचारों से प्रभावित होता है। इसलिए कहा जाता है कि हम परिस्थिति को नहीं बदल सकते लेकिन परिस्थिति के पीछे जो विचार शक्ति है, जो हमारी मन:स्थिति है उसको ज़रूर बदल सकते हैं। परिस्थिति पराई चीज़ है और स्वस्थिति अपनी चीज़ है। तो अपनी चीज़ को बदलना सहज है, पराई के बजाए। सकारात्मक सोचने की शक्ति से परिस्थिति धीरे-धीरे खुशी में बदल जाती है। सकारात्मक सोचना एक कला है। जीवन में पग-पग पर विकट, प्रतिकूल तथा इच्छा के विरुद्ध परिस्थितियाँ आती हैं। कोई अपमान कर रहा है, कोई ग्लानि कर रहा है, कोई कहना नहीं मानता है, इच्छा के अनुसार कर्म नहीं हो रहा है, कुछ नुकसान हो रहा है, किसी ने धोखा दे दिया है, किसी ने बुरा-भला कह दिया है – ऐसी कई बातें आती हैं। ऐसे समय पर नकारात्मक सोच अपने आप चल पड़ती है क्योंकि गिरने के लिए शक्ति की आवश्यकता नहीं होती लेकिन चढ़ने के लिए शक्ति की आवश्यकता होती है। सकारात्मक सोचने के लिए मेहनत करनी पड़ती है। जिसने सकारात्मक सोचने की कला सीख ली उसके लिए मानो जीवन में अन्धकार समाप्त हो गया। उसके हाथ में सुख और शान्ति की कुंजी आ जाएगी। एक सफेद कागज के किसी कोने में स्याही का धब्बा लगा हुआ हो तो कितने ही लोग यह उत्तर देंगे कि स्याही का धब्बा है परन्तु कुछ लोग यह भी उत्तर देंगे कि यह तो सफेद कागज है। अवगुणों पर ध्यान बहुत जल्दी जाता है। गुणों पर ध्यान देर से जाता है। सकारात्मक सोचने से हमारी शक्ति बढ़ती है। भले ही हम सब की बुराइयाँ जानते हों लेकिन बुराइयों को जानते हुए, **कमज़ोरियों को जानते हुए भी अच्छाइयों पर ध्यान देना ही सकारात्मक सोचना है।**

मान लीजिए कि आप घर से बाहर निकलने ही वाले हैं और वर्षा प्रारम्भ हो जाती है। ऐसे समय में आप नकारात्मक भी सोच सकते हैं कि मेरी तकदीर अच्छी नहीं है। कार्य नहीं बन पाएगा। इसके विपरीत, आप सकारात्मक भी सोच सकते हैं कि चलो, मैं घर में ही था, अगर रास्ते में होता तो बहुत बुरा होता, अब एक छाता और रेनकोट लेकर चलता हूँ। अगर नहीं निकल सकते तो भी नकारात्मक सोचने की आवश्यकता नहीं है क्योंकि आपको घर बैठ कर काम करने का अच्छा समय मिला। सकारात्मक सोचने से मन को बहुत शान्ति मिलती है। नकारात्मक सोच मनुष्य का जीवन ही नष्ट कर देती है। आज मन की जो कमियाँ-कमज़ोरियाँ हम अनुभव करते हैं, इन सबका कारण अनुमान, भय, शक, क्रोध, ईर्ष्या, द्वेष, जलन, हवस, कपट, अपमान आदि हैं। जब हम नकारात्मक सोचते हैं तो सचमुच संकल्पों का पहाड़ खड़ा कर लेते हैं। हमें अपना भविष्य भी दिखाई नहीं देता। लेकिन सकारात्मक सोच इस प्रकार है जैसे कि आप ऊँचाई पर चढ़ गए। **जिस प्रकार अंधेरे के बाद उजाला अवश्य आता है, विकट परिस्थिति भी आने के बाद चली भी जाती है। विकट परिस्थिति आई, पर हिम्मत से उसका सामना किया तो वह चली जाएगी। परिस्थिति को पहले स्वीकार कीजिए, फिर उसे पार करने के लिए उपाय ढूँढ़िए, न कि निराश होकर बैठ जाइये। सकारात्मक विचार मन की खुराक हैं। अगर स्वस्थ मन होगा तो व्यक्तित्व भी सन्तुलित होगा। हमारा स्वमान**

बना रहेगा, सकारात्मक विचार करने से सहन करने की शक्ति बढ़ती है। इस शक्ति के अभाव में मनुष्य सहन नहीं कर पाता है। किसी ने कोई राय दी, शिक्षा दी तो अभिमानवश हम स्वीकार नहीं करते और सोचते हैं कि क्या समझता है वह अपने आपको, पहले खुद को तो देखे, जो दूसरों को कहने निकला है। इस प्रकार के नकारात्मक विचार से अपनी उत्तेजना व्यक्त करते हैं। लेकिन होना यह चाहिए कि हम सोचें कि यह हमारी ही भलाई के लिए है। शिक्षा देने वाला अनुभवी है। वो जानता है कि किसमें मेरा कल्याण है और किसमें मेरा अकल्याण है। लेकिन जो स्वार्थी है, लोभ के वश है, अभिमान के वश है वो शिक्षा को कहाँ समझता है। वो तो यही सोचता है कि इसने मेरा नुकसान किया, इसने मेरी शान गँवा दी। लेकिन सकारात्मक सोचने वाला कभी भी ऐसा नहीं सोच सकता। सकारात्मक सोचने वाला औरों को देखने में समय नहीं गँवाता। वह अपने कार्य में ही मस्त रहता है। अगर कोई बेकार की बात सुनाता भी है तो एक कान से सुन दूसरे से निकाल देता है।कई लोग बीती बातों को सोचने में समय गँवा देते हैं। किसी मुर्दे को दफनाया जाए और फिर कुछ वर्षों के बाद उस कब्र को खोदा जाए, तो क्या मिलेगा। इसी प्रकार पुरानी बातों को याद करके अपने मन को दु:खी करना, इससे कोई लाभ नहीं होता। सकारात्मक विचार करने वाला जानता है कि जो कुछ हुआ उसमें कोई कल्याण था, कोई राज़ था। इससे मैंने सबक सीख लिया। सकारात्मक विचार करने वाले को अगर कोई बुरा भी कहता है तो भी वह दु:खी, क्रोधित और नाराज नहीं होता। वो यही सोचता है कि इससे कर्मों का हिसाब-किताब समाप्त हो गया या यह सोचता है कि **संसार रूपी ड्रामा में सबका अलग-अलग पार्ट है। वर्तमान समय वह व्यक्ति इस प्रकार की भूमिका निभा रहा है। मुझे नाराज नहीं होना है। वह कहाँ तक मेरा बुरा कर सकता है क्योंकि मेरा भाग्य तो मेरे हाथों में ही है। कोई भी व्यक्ति किसी का भाग्य छीन नहीं सकता और न ही कोई किसी को भाग्य दे सकता है।** अगर कोई अभिमान रखे कि मैं इसको भाग्य देता हूँ तो यह सोचना भी अज्ञान है। हर एक आत्मा अपना भाग्य साथ लेकर आती है। हर एक व्यक्ति अपनी तकदीर खुद जगाता है। दूसरा उसकी तकदीर नहीं जगा सकता। सवेरे उठते समय मन में यह दृढ़ संकल्प कर लें कि मुझे हर हालत में सकारात्मक सोचना है। आज की दुनिया में घर-घर कलह-क्लेश, मन-मुटाव, लड़ाई-झगड़े का कारण यदि जानें तो पायेंगे कि बात तो कुछ भी नहीं थी परन्तु छोटी-सी बात को इतना बढ़ा-चढ़ा करके किया जाता है जो उसका अन्तिम परिणाम बहुत ही बुरा निकलता है। आज देश-देश में तनाव, लड़ाई इन सबका कारण है नकारात्मक सोचना। अनुमान, वहम, शक ये तीनों बहुत बड़ी बीमारियाँ हैं जो सकारात्मक विचार लाने नहीं देती हैं। परन्तु मेरे साथ बुरा करने वाले के साथ अगर मैं अच्छा व्यवहार करूँ तो ज़रूर वह एक दिन पिघलेगा। क्यों नहीं पिघलेगा। लेकिन हम अगर बाँस की लकड़ी की तरह बन जायेंगे तो बात बिगड़ेगी। दो बाँस की लकड़ियों में हवा के द्वारा हल्की रगड़ लगते ही आग निकलना शुरू हो जाती है। बीती का चिन्तन और आगे का चिन्तन करने से मिलेगा भी क्या? इसकी बजाए हम क्यों न साचें कि हम वर्तमान को सुधारें। अगर कोई बात नहीं सुधरती तो न्यारा बनने का भी प्रयास करना चाहिए। कई बार न्यारा बनके समस्या का समाधान होता है और कई बार उसमें शामिल होकर समाधान किया जाता है। कहाँ न्यारा बनना है और कहाँ प्यारा बनना है, यह भी अन्दर निर्णय शक्ति होनी चाहिए। उसके लिए प्रभु का साथ लो। अपने में हिम्मत बाँधो, सकारात्मक सोचने का लक्ष्य रखो, तो आपका हर कार्य श्रेष्ठ हो जाएगा और जीवन में सच्ची शान्ति, सुख का अनुभव करेंगे। आपकी शान्ति से पूरे विश्व को शान्ति के प्रकम्पन मिलेंगे। ❑❑❑

समय का महत्त्व

– ब्रह्माकुमारी ममता, पानीपत

किसी को समय देकर देर से पहुँचने पर अक्सर यह कहा जाता है कि "It is Indian time." अर्थात् यह भारतीय लोगों का समय है। प्रश्न यह उठता है कि क्या वास्तव में भारतियों को समय की कदर नहीं है। यह निश्चय ही हकीकत नहीं है। हाँ, इतना अवश्य है कि भारत में समय की कदर न करने वाले लोगों की संख्या बहुत ज़्यादा है लेकिन यह भी किसी से छिपा नहीं है कि टाटा, बिड़ला, मोदी, अम्बानी, सिंघानिया व अजीज प्रेम जी जैसे लोगों ने समय का सदुपयोग करके, सफलता के सर्वोच्च शिखर पर पहुँच कर विश्व में अपनी पहचान बनाई है।

किसी व्यक्ति ने प्रश्न पूछा कि आज अपराध करने वालों की संख्या ज्यादा क्यों है तो दूसरे ने उत्तर दिया कि आज लोग अपना समय खाली रह कर बिताते हैं इसलिए अपराध बढ़ते जा रहे हैं। आमतौर पर जब समय के बारे में ज़िक्र चलता है तो लोगों का यही कहना होता है कि क्या करें, समय नहीं मिलता। लेकिन विचारणीय विषय है कि क्या समय की सचमुच कमी है। अपने आप उत्तर आयेगा 'नहीं' क्योंकि हम सारे दिन में बहुत सारा समय बरबाद करते हैं। इस संसार में जिसने भी प्रसिद्धि प्राप्त की है, चाहे धन के क्षेत्र में, या धर्म के क्षेत्र में या किसी अन्य क्षेत्र में उसके पास भी वही 24 घण्टे ही थे। हमारे पास भी वही 24 घण्टे ही हैं। लेकिन उन्होंने जीवन में समय को महत्त्व दिया। ज़्यादा दूर की बात क्यों लें, इस संस्था (प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय) के साकार स्थापक पिताश्री ब्रह्मा ने जीवन में एक-एक सेकण्ड को महत्त्व दिया। उनका कहना था कि एक-एक सेकण्ड मिल कर मिनट बनता है और मिनट से घण्टे और घण्टों से दिन और दिनों से वर्षों का निर्माण होता है। इसलिए सेकण्ड-सेकण्ड जमा करने से बहुत समय बच जाता है। समय को महत्त्व देकर वे नम्बरवन सतयुगी पदवी के अधिकारी बन गए।

अधिकतर लोगों को ऐसा भी देखा गया है कि वे अपना कार्य समय पर नहीं करते। आज का कार्य कल पर और कल का परसों पर छोड़ देते हैं। लेकिन याद रहे कि इस दुनिया में कल कभी नहीं आता। इसलिए जिस कार्य के लिए संकल्प (विचार) आए उसे तुरन्त कर डालो। नहीं तो, वह कार्य कभी भी नहीं होगा। एक सत्य घटना याद आती है कि एक व्यक्ति किसी धार्मिक संस्था से जुड़ा हुआ था और एक धार्मिक भवन का निर्माण कार्य चल रहा था। उसे विचार आया कि क्यों न मैं भी कुछ सहयोग करूँ। उसने निश्चय किया कि जब मैं कल वहाँ जाऊँगा तो अवश्य दान करके आऊँगा। लेकिन जब कल (अगला दिन) आया और जाने का समय हुआ तो फिर मन में विचार आ गया कि कल दान दूँगा। फिर अगला कल आने पर भी यही विचार आया। इस तरह वह कल-कल करता रहा। इसी दौरान शहर में बाढ़ आ गई और उसका सब कुछ नष्ट हो गया। इसलिए किसी ने ठीक ही कहा है कि "**शुभ कार्य में देरी कैसी**"। **जो श्रेष्ठ विचार आए उसे तुरन्त कर डालो। नहीं तो सोचो कि वह कभी साकार नहीं होगा। अशुभ कार्य में देरी भले ही करें इससे वह अगले दिन तक परिवर्तित हो जाएगा।**

किसी कवि ने कहा है "मुर्खों का दिन खाने में और रात सोने में बीत जाती है।" विचार करें कि प्रतिदिन 8 घण्टे सोने वाला व्यक्ति 75 वर्ष की आयु में से 25 वर्ष तो सोने में ही बिता देता है। हम यदि समय का सदुपयोग चाहते हैं तो हम समय-सारणी बनाएँ। कार्य को पूरा करने का कुछ समय निश्चित करें।

तभी हम समय को बचा सकते हैं तथा उसका सदुपयोग कर सकते हैं। समय के बारे में कहावत है –

समय का फ़िकर किया जिसने,
बना वही महान।
समय को मूल्य दिया जिसने,
बना वही मूल्यवान।।

कहते हैं कि समय एक धन है। जैसे व्यक्ति स्थूल धन को गँवाता नहीं। ऐसे ही समय रूपी धन को भी व्यर्थ चिन्तन में नहीं गँवाना चाहिए। कहते हैं कि एक बार शंकराचार्य से एक व्यक्ति ने पूछा कि संसार में सबसे बड़ी हानि कौन-सी है? तो उन्होंने उत्तर दिया कि समय को गँवाना सबसे बड़ी हानि है। समय का सदुपयोग करने के लिए हमें 'समय की कीमत' से सम्बन्धित कुछ बिन्दु ध्यान में रखने चाहिएँ, जैसे कि –

1. एक सेकण्ड की कीमत पूछनी हो तो उस धावक से पूछो जिसने एक सेकण्ड की कमी के कारण 100 मी. की रेस हार दी हो और स्वर्ण पदक से वंचित रह गया हो।

2. एक मिनट की कीमत पूछनी हो तो उस यात्री से पूछो जिसके एक मिनट देर से पहुँचने पर रेल छूट चुकी हो।

3. एक दिन की कीमत पूछनी हो तो उस अधिकारी से पूछो जो किसी वजह से एक दिन देर से कार्यालय पहुँचा और पूरी जीवन की नौकरी चली गई।

4. एक साल की कीमत पूछनी हो तो उस विद्यार्थी से पूछो जो परीक्षा में फेल हो गया और एक साल के लिए अपने साथियों से पिछड़ गया।

❖❖❖

आज कह रहे नयन-नयन हैं

– देवीचन्द कौशिक, उत्तम नगर, देहली

हे माते! स्मृति तुम्हारी, स्व स्मृति जाग्रत करती है।
सद्‌बुद्धि सन्मति प्रदायक, पुरुषार्थ में गति भरती है।।

तृप्त नयन, विशाल चितवन, अधरों पर अमृत का सागर।
बाहों में भू-गगन समाए, दिव्यदर्श, उर करुणा सागर।।

उन्नत ललाट, विराट चिन्तन, चरण देव-पद, गति रूहानी।
सत्य शारदा, संस्कृति रूपा, सरल सुलभ गुप्त अनजानी।।

ममता, वात्सल्य, स्नेह की, सत्य सार्थक चेतन मूरत।
जिसने जाना उसने पाया, सचमुच तुम सबकी माँ मूरत।।

निज के पुरुषार्थ से निर्मित, विधि की निधि, शक्ति सेनानी।
दीप्तिमान ध्रुव तारा बन, गाथा दौहराई कल्प पुरानी।।

एक रूप एक रंग थे, आदर्श और यथार्थ तुम्हारे।
जन-जन साक्षी एक रूप थे, शब्द अर्थ भावार्थ तुम्हारे।।

धर्म धारणा, सहन साधना, ज्ञान-योग की मूरत प्यारी।
दैवीगुण का गुलदस्ता नहीं, चलती-फिरती चेतन क्यारी।।

निजप्रकृति की सदा नियन्त्रक, संकल्पों की समर्थ शासक।
मानवीय प्रतिभा की पूँजी, बालक, मालक, पावक, पालक।।

भाषण और भासना तुमने, निज जीवन में एक बनाए।
प्रभु-पंथ में सभी असम्भव, तुमने सम्भव कर दिखलाए।।

हे कमलेन्द्रि! पथ में आए, आँधी तूफाँ घोर बदरिया।
जैसी ओढ़ी वैसी छोड़ी, निर्मल तन की श्वेत चदरिया।।

स्व में स्थित शिव को अर्पित, जग आदर्श, जगत कल्याणी।
उपदेशात्मकता के युग में, अनुकरणीय सहज वरदानी।।

पुरुषार्थ की पावन प्रतिमा, जन्म कुमारी, जग महतारी।
तुम खुद-ही-खुद के समान थी, किससे उपमा दें तुम्हारी।।

स्मृति के क्षण, ब्राह्मण जन करते उर से आज नमन हैं।
मातृत्व की तुम दिव्य कहानी, आज कह रहे नयन-नयन हैं।।

राजयोग द्वारा चढ़ी देवत्व की सीढ़ियाँ

– ब्रह्माकुमारी लक्ष्मी, मैसूर

सन् 1968 में मैंने मैट्रिक की परीक्षा पूरी की। अपने विद्यालय में मुझे विद्यार्थी बहनों की नायिका के रूप में देखा जाता था। भाषण प्रतियोगिता में, खेल-कूद प्रतियोगिताओं में तथा अध्ययन के क्षेत्र में मैंने अनेक इनाम तथा छात्रवृत्तियाँ प्राप्त कीं। इन सब बातों के कारण मेरा उमंग यही रहता था कि मैं जीवन भर विद्यार्थी ही बनी रहूँ। छोटी आयु से ही मैंने स्वयं के पाँवों पर खड़े होने, माता-पिता की सेवा करने तथा समाज-कल्याण का कार्य करने का लक्ष्य मन में निर्धारित कर लिया था। मेरे चेहरे के हाव-भाव तथा मस्तक को देखकर मेरे अध्यापक तथा अन्य लोग मुझे बहुत भाग्यवान समझते थे। स्वयं मैं भी मन-ही-मन अपने से बहुत खुश रहती थी परन्तु कोई प्रत्यक्ष कारण समझ में नहीं आता था।

एक बार, उन्हीं दिनों 'बाल दिवस' पर नेहरु जी से मिलने जाने वाले बच्चों में बैंगलोर से मेरा भी चुनाव हुआ। लेकिन किसी ने पिताजी को मुझे भेजने के लिए निरुत्साहित कर दिया। अगले दिन, जो बच्ची मेरे स्थान पर चयनित होकर नेहरूजी से मिलने गई थी उसका फोटो अखबार में देख मुझे बहुत दु:ख हुआ। मैंने उसी दु:ख में पिताजी को कह दिया - ''आप मेरे पिताजी न होते तो अच्छा था, आपके रोकने के कारण मेरा एक सुनहरा अवसर चला गया।'' पिताजी को यह बात लग गई और उसी दिन मुझसे वायदा किया कि आज के बाद तुम्हारे जीवन में आने वाले किसी सुअवसर के लिए बाधा नहीं बनूँगा।

मैं सनातन धर्म को मानती थी और देवताओं में श्रद्धा रखती थी। घर की परिपाटी के अनुसार बालाजी की पूजा करती थी। हमारे घर के पीछे प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय की एक शाखा थी। वहाँ प्रतिदिन आने वाली एक माताजी मुझे ज्ञान-योग सीखने का निमन्त्रण देती थी। मैं बाह्य नेत्रों से देखती थी और ईश्वरीय विद्यालय को क्रिश्चियन संस्था समझती थी। मेरी इस धारणा को परिपुष्ट करने वाले कारण थे, भाई-बहनों का श्वेत परिधान तथा तिलक विहीन मस्तक। मैं मन-ही-मन झुंझलाती थी कि यह माताजी मुझे ही क्यों बुलाती है, किसी वृद्ध को बुलाए ना। इतना होने पर भी उसका अति स्नेह भरा निमन्त्रण मन के किसी कोने में अपना स्थान

बना चुका था जिसका अहसास मुझे भी बाद में हुआ।

मैंने छोटी आयु में साइकिल चलाना सीख लिया था। मेरा भाई मुझे ऐसा करने से रोकता था। एक दिन उसने मुझे बहुत कड़ाई से रोका तो मैंने मन में विचार किया कि भाइयों के बन्धन में रहना और इनके अधीन होकर चलना, क्या यही मेरा जीवन है? मुझे ऐसे बन्धन में नहीं रहना। मन में जब ऐसा विद्रोह जागा तो मुझे आश्रम की माताजी याद आई और सांयकाल चुपके से उसके साथ सेवाकेन्द्र पर चली गई। ईश्वरीय ज्ञान समझकर मुझे अपार प्रसन्नता मिली। मैंने नेहरूजी से सम्मुख मिलने का एक लौकिक सुअवसर खोया था परन्तु उसके बदले में कहिये या भाग्य और भावी की पूर्व निर्धारित योजना कहिये, मुझे परमात्मा पिता से मिलने

का एक हीरे तुल्य सुअवसर पुन: प्राप्त हो रहा था। पिताजी ने जब पूछा तो मैंने पूर्व में किए गए वायदे की उनको स्मृति दिलाई, फिर उन्होंने आश्रम जाने से नहीं रोका। इस घटना के तीसरे दिन गणेश उत्सव था। मैंने पिताजी को कहा कि मैं गणेशोत्सव पर आश्रम जाऊँगी, रात वहीं रहूँगी और अगले दिन 10.00 बजे आप आकर दादी हृदयपुष्पा जी से मेरे बारे में विस्तार से बातचीत कर लेना। मेरी आयु मात्र 15 वर्ष की थी। दादीजी को मैंने रात रहने का और ब्रह्माकुमारी बनने का संकल्प सुनाया तो मेरी इस हिम्मत पर वे बहुत प्रसन्न हुई। पिताजी के साथ दादीजी की बात होने के बाद मुझे स्वीकृति मिल गई और बड़ी खुशी-खुशी मैं आश्रम जीवन में ढ़लने लगी। हिम्मत का अदम्य ज्वार मेरे अन्दर प्रारम्भ से था और आगे बढ़ने का लक्ष्य सदा सामने रहता था इसलिए कुछ दिनों में ही मैं ईश्वरीय ज्ञान की गहराई, योगाभ्यास के फायदे तथा ईश्वरीय सेवा के विभिन्न तरीके सीख गई। उन्हीं दिनों तेनजिंग ने एवरेस्ट पर विजय प्राप्त की थी, अखबारों में इसकी विशेष चर्चा आती थी। मेरे मन में भी विचार आता था कि मैं भी देवी बनूँ, ऊँचे पर्वत पर चढ़ूँ और सारी दुनिया मेरे देवत्व से लाभ ले। राजयोग केन्द्र में आकर मैं सचमुच ही दिनों-दिन देवत्व की सीढ़ियाँ चढ़ने लगी।

प्यारे ब्रह्मा बाबा तब साकार में थे। हर सप्ताह उनके याद-प्यार भरे पत्र तथा याद-प्यार वाली टेप (रिकॉर्ड की हुई) आती थी। प्यारे बाबा के वरद हस्तों से लिखे लाल-लाल अक्षरों वाले वरदानी पत्रों में जब आता था - **''बच्ची, बाप का नाम रोशन करने वाली है''**, तो खुशी का पारावार नहीं रहता था और प्यारे बाबा से साकार मिलन जैसी अनुभूति होती थी। फिर भी साकार मिलन की बहुत उत्कण्ठा थी परन्तु ईश्वरीय सेवा के कार्यक्रमों की व्यस्तता इस उत्कण्ठा की पूर्ति में आड़े आ जाती थी। फिर 21 जनवरी, 1969 को मधुबन पहुँचने की तिथि निशिचित हुई, परन्तु विश्व-नाटक में दूसरा ही दृश्य निश्चित था। प्यारा बाबा इससे पहले ही उड़ता पंछी बन गगन से पार सूक्ष्मवतन वासी बन गया। मेरे पास, मन के रंज को ड्रामा की भावी का लेप लगाकर दफन कर देने के अलावा और कोई चारा ही नहीं था।

साकार ब्रह्मा बाबा ने आध्यात्मिक शिक्षिकाएँ तैयार करने के लिए देहली में एक प्रशिक्षण केन्द्र प्रारम्भ करने की योजना बनाई थी जो बाद में मधुबन वरदान भूमि में साकार हुई। अप्रैल, 1969 में पहला प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित हुआ जिसमें भाग लेने के निमित्त मेरा पुन: आबू आना हुआ। प्रशिक्षण के उपरान्त 6 मास मधुबन में रहने के बाद मुझे मैसूर में ईश्वरीय सेवा के निमित्त भेजा गया जहाँ मैं अब तक सेवारत हूँ। यहाँ आने पर प्यारे बाबा तथा बड़ों की दुआओं से अनेक नवीन ईश्वरीय सेवाओं के सुअवसर मुझे मिलते रहे हैं।

मैसूर विश्वविद्यालय के साथ एक समझौते के अनुसार मास के हर तीसरे रविवार को एक हजार लोगों के बैठने की सुविधा वाला सभागृह वे हमें देते हैं जिसमें सांयकाल लगभग ढाई घण्टे ज्ञान-योग का कार्यक्रम चलता है जो सारे शहर में बहुत ही प्रसिद्ध है और जिसके द्वारा हर मास लगभग 500 नए भाई-बहनों को ईश्वरीय सन्देश मिलता है। मैसूर सेवाकेन्द्र द्वारा 'ज्ञान सरोवर' नाम से रिट्रीट हाउस बनाया गया है जहाँ राज्य तथा केन्द्र सरकार के सम्मिलित सहयोग से मूल्य-शिक्षा के लिए अध्यापकगण आते हैं। ये 13 दिन हमारे पास ठहरते हैं और सरकार की तरफ से टी.ए. तथा डी.ए. भी प्राप्त करते हैं। उत्तर कर्नाटक में यह सेवा येल्लापुर में चलती है और दक्षिण कर्नाटक की यह सेवा मैसूर में चलती है। हाल ही में कर्नाटक खुले विश्वविद्यालय के साथ समझौता हुआ और उन्होंने भी अपने सहयोगियों को 5 समूहों में

मूल्य-शिक्षा के लिए भेजने का निर्णय लिया है। डॉ. राजकुमार द्वारा स्थापित कन्नड़ संघ की ओर से संस्था की सामाजिक-आध्यात्मिक सेवाओं के लिए मुझे कित्तू राणी चेनम्मा अवॉर्ड मिला जिसमें शील्ड, शॉल और प्रशस्ति-पत्र प्रदान किया गया। मैसूर शहर में शान्ति बनाए रखने के लिए सरकार की तरफ से एक टास्क फोर्स का निर्माण किया गया है जिसमें अन्य धर्म के नेताओं के साथ-साथ मुझे भी शामिल किया गया है। मैसूर सब-ज़ोन के सम्बन्ध में लगभग 70 सेवाकेन्द्र, 150 गीता पाठशालाएँ और 200 समर्पित सेवाधारी भाई-बहनें हैं। पिछले 3 वर्षों में कारागृह की सेवाओं में भी बहुत सफलता मिली है। कारागृह के अन्दर लायन क्लब की ओर से एक योग-कक्ष निर्मित किया गया है। लगभग 300 कैदी भाई-बहनें वहाँ नियमित रूप से ज्ञान क्लास करते हैं। सन् 1999 में मुझे एक मास यूरोप जाने का सुअवसर प्राप्त हुआ। वहाँ दादी जानकीजी की विशेष पालना और प्रेरणाएँ मिलीं। ब्र.कु. बहनों-भाइयों के साथ विशेष अनुभव की लेन-देन भी की। मैंने देखा कि वहाँ घरों में रहने वाले, पारिवारिक जीवन व्यतीत करने वाले भाई-बहनें भी प्यारे शिव बाबा की श्रीमत अनुसार पूरी तरह ट्रस्टी (निमित्त) होकर चलते हैं। घर में रहते हुए भी उनका यह समर्पण भाव और धारणायुक्त जीवन विशेष अनुकरणीय और प्रशंसनीय है। दादी जानकीजी की अथक पालना का वे स्वरूप हैं।

☆☆☆

आज क्या बात है

– ब्र.कु. राजवीर, बड़ौत

आज वश में नहीं दिल के जज़बात हैं,
बदले-बदले से मन के भी हालात हैं,
आज क्या बात है। **आज क्या बात है**।।

ढूँढ़ती है किसे आज सबकी नज़र,
किसकी खातिर मचलने लगी रहगुज़र,
बन्द होठों पे कितने सवालात हैं। **आज क्या बात है**।।

दिल को झकझोरते मौन वीणा के तार,
गूँजती है फ़िज़ा में बिछोह की पुकार,
भीगी पलकों के पीछे बरसात है। **आज क्या बात है**।।

बैठ किरणों के रथ पर चली आयेगी,
नैनों से शक्ति, अधरों से अमृत वो बरसायेगी,
कितने ममता भरे ये ख्यालात हैं। **आज क्या बात है**।।

बापदादा की तरह हमसे मिलने को आ,
प्रीत की रीत को माँ तू भी निभा,
छोटी-सी ही सही पर ज़रूरी बहुत ये मुलाकात है।
आज क्या बात है।।

निश्चय चट्टान-सा, बच्चे जैसा समर्पण,
दिल के श्रद्धा सुमन, शारदे तुझको अर्पण,
वीणा बजती रहे, फूल खिलते रहें, बस यही तात है।
आज क्या बात है।।

❑❑

हम गरीब क्यों हैं?

–ब्रह्माकुमारी उर्मिला, शान्तिवन

संसार की कुल आबादी का 16 प्रतिशत हिस्सा ऐसा है कि जिसकी प्रति व्यक्ति, प्रति मास आय 1500/- भी नहीं है। करीब आधी आबादी अर्थात् 300 करोड़ लोग प्रति मास, प्रति व्यक्ति 3000/- से भी कम आय पर जीवनयापन करते हैं। भारत की स्थिति भी बहुत दयनीय है। यहाँ 20 करोड़ लोग गरीबी-रेखा से नीचे का जीवनयापन कर रहे हैं। प्रश्न है कि इतनी गरीबी का कारण क्या है ? दिनों-दिन बढ़ती आबादी और घटते संसाधन इसका कारण हैं। चिन्तकों का कहना है कि धरती कोई रबड़ तो है नहीं कि जिसे जब चाहो खींचकर बढ़ा लो। सृष्टि में मौजूद 5 तत्वों की उपलब्ध मात्रा एक सीमा में है। इन तत्वों का उपयोग नए-नए मानवीय शरीर बनाने में और उनकी पालना में निरन्तर हो रहा है। इसलिए इनमें प्रदूषण भी बढ़ रहा है और मांग की भेंट में आपूर्ति कम होने के कारण इनको संग्रह करने से इनका दुरुपयोग भी हो रहा है।

गरीबी के उपरोक्त कारण तो सबको समझ में आते हैं परन्तु एक अन्य छद्म कारण भी है जिसके प्रति जन साधारण की जागृति कम है। उदारहण के लिए, एक बार हम एक गाँव में ज्ञान-चर्चा के लिए गए तो वहाँ एक बहन ने अपनी दयनीय अवस्था का वर्णन करते हुए कहा कि हमारी तो आमदनी बहुत कम है, झोपड़ी में गुज़ारा करते हैं और बच्चों को भी पढ़ा नहीं सकते हैं। दया भरी दृष्टि से उसे निहारते हुए मैंने पूछा कि आपको भरपेट भोजन भी मिल पाता है या नहीं ? मेरे इस प्रश्न पर वह चुप हो गई। परन्तु उसके साथ वाली महिला ने कहा - बहन जी, इसके घर तो महीने में 15 दिन मांसाहार होता है। आज भी यह मांस पकाकर आई है। साथ में उसने यह भी बताया कि बाज़ार में मुर्गे की कीमत लगभग 150/- होती है। मेरे मन में विचार चला कि शाकाहारी भोजन एक छोटे परिवार का (दो व्यक्ति, दो बच्चे) 50/- रुपये में बन सकता है परन्तु यह आमिष भोजन तो बहुत महंगा है। यदि यह बहन, शाकाहार को अपनाए तो मास में, वर्ष में हजारों रुपये की बचत हो सकती है जिससे वह दूध, दाल, शिक्षा, मकान, बीमारी आदि से सम्बन्धित आवश्यक खर्चों को पूरा कर सकती है। शाकाहरी, सात्विक भोजन जहाँ कम खर्च के निमित्त है वहीं इससे मानव में दया, प्रेम, सन्तोष की भावना पनपती है और वह भाई-भाई के नाते से सामाजिक सद्भावना को बढ़ावा देता है क्योंकि पवित्र अन्न, पवित्र मन का निर्माण करता है। मांसाहारी भोजन उत्तेजना तथा निर्दयता को बढ़ाकर मानव को भावनाशून्य तथा पत्थरदिल बना देता है। इससे सामाजिक समस्यायें बढ़ती हैं। काम-क्रोध की आग भीतर धधकती है जो कर्मों में प्रकट होकर बहुत नुकसान करती है।

छोटी-छोटी बातों को, सहनशीलता की कमी के कारण भयानक रूप दे देना भी आज के समाज की बहुत बड़ी समस्या है। क्रोध, लोभ की आग लोगों को गरीबी और अभावों में धकेल देती है। एक अन्य उदाहरण देखिए, एक परिवार में चार सगे भाई अपने बाल बच्चों और माता के साथ सुख से रह रहे थे। अचानक सबसे छोटे भाई का भाग्य जागा और उसने एक बन्द होटल को चलाकर एक लाख रुपया कमा लिया। अन्य भाई उससे हिस्सा मांगने लगे। छोटे भाई ने कहा - मेरी मेहनत का पैसा है, हिस्से नहीं करूँगा।

दूसरों ने कहा - हम अभी साझे में हैं, आपको हिस्सा करना पड़ेगा। इसी बात पर कहा-सुनी हुई, जो मार-पीट में बदल ग़ई और चारों भाइयों को खूब चोटें आई। पुलिस आई, दो को सजा हुई, डॉ. के इलाज पर भी काफी पैसा खर्च हुआ और मुकदमा भी चला। कई हजार रुपये का खर्च करने, समाज में बदनामी और हंसी का पात्र बनने तथा समय और मानसिक शक्तियों को व्यर्थ गंवाने के अलावा उन्हें इस प्रकरण से कुछ भी हासिल नहीं हुआ। उनका आपस में बोलना और एक-दो के घर आना-जाना भी अब बन्द हो चुका है। कुछ रुपये पुलिस, कुछ डॉक्टर और कुछ कचहरी की भेंट चढ़ गए। इससे तो अच्छा था कि पैसा भले ही छोटे भाई के पास ही रहता, घर में तो था। अपने भाई का पैसा, शुभ भावना रखें तो तकलीफ में काम आ सकता है परन्तु जो कचहरी और पुलिस की भेंट चढ़ गया, वह किस काम का। इस प्रकार हम समझ सकते हैं कि ईर्ष्या, क्रोध, असहनशीलता, लालच आदि दुर्गुणों के कारण कितना धन नष्ट होता है। ये सब गरीबी के छद्म कारण हैं। **यदि हम न्याय और नैतिकता को साथ लेकर चलें तो फालतू खर्चों से मुक्ति पा सकते हैं।**

मांसाहार और मुकदमों में धन को व्यर्थ करने के साथ-साथ मानव व्यसनों में भी बहुत धन बरबाद करता है। समझदार लोग कहते हैं कि ज़हर मुफ्त मिले तो भी नहीं खाना चाहिए परन्तु आजकल लोग पैसा देकर ज़हर खरीदते और खाते हैं। जिस तम्बाकू के खेत में पशु भी नहीं घुसता उसको मानव जैसा बुद्धिमान प्राणी खाता, पीता, सूंघता है, कितनी दयनीय है उसकी बौद्धिक स्थिति! **मानव सिगरेट या बीड़ी को जलाने के साथ-साथ अपने नोटों को भी जलाता है और स्वास्थ्य को खराब करके दमा, खांसी, कैन्सर आदि रोगों के इलाज में धन लगाता है। तो यह एक कुचक्र है। पहले धन व्यसनों में लगाओ, फिर रोगों को मिटाने में फिर धन लगाओ।**

आजकल लोग बन्दरों की बहुत पूजा करते हैं। इसलिए नहीं कि वे हनुमान का अवतार हैं बल्कि इसलिए कि उनमें मानव की भेंट में एक विकार कम है। मानव में छः विकार-काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार और व्यसन हैं, परन्तु बन्दर में व्यसन नहीं हैं। वह मानव की बहुत बातों की नकल करता है परन्तु इस आदत की नकल कभी नहीं करता। वह आज के मानव की भेंट में अधिक बुद्धि रखता है और इसलिए मानव द्वारा पूजा जाता है।

सार रूप में हम कह सकते हैं कि बढ़ती महंगाई को कोसने से पहले हर मानव को अपने भीतर झांक कर देखना है कि मेरी गलत आदतें इसमें कितनी ज़िम्मेवार हैं। हम दूसरों को नहीं बदल सकते परन्तु अपना परिवर्तन करके अपने पैसे बचा सकते हैं। व्यसन, अमीरों में ही हों, ऐसा नहीं है, गरीब भी इसकी बहुत चपेट में हैं। इसलिए एक तो गरीबी, ऊपर से व्यसन, फिर बीमारियाँ, इस कारण गरीब उबर नहीं पाते हैं और गरीबी अधिकाधिक बढ़ती जाती है। कुछ चीज़ें मानव के वश में नहीं होती परन्तु कुछ चीज़ें उसके अपने हाथ में होती हैं। वह संसाधनों को नहीं बढ़ा पाता परन्तु स्व पर नियन्त्रण करके दुर्गुणों, इच्छाओं और तृष्णाओं को जीतकर बचत कर सकता है। आज की बढती भौतिकवादी सोच के कारण और घर-घर संचार साधनों की पहुँच के कारण लोग फैशन की ओर भी आकर्षित होते हैं परन्तु फैशन न तो आवश्यकता है और न ही आवश्यक चीज़ों की तरह सस्ता। फैशन के पीछे दौड़ तो रेगिस्तान में पानी के भ्रम में दौड़ते मृग की दौड़ जैसी है। क्योंकि आज खरीदी जाने वाली चीज़ कल पुरानी हो जाती है। आत्मिक सौन्दर्य की पहचान न होने के कारण और शारीरिक रूप से सुन्दर दिखने की लालसा से मानव ने क्रूरता की हदें

लाँघ दी हैं। एक मोटे अनुमान के अनुसार औषधि निर्माण, सौन्दर्य प्रसाधन निर्माण और जिह्वातृप्ति के लिए इग्लैंड की विभिन्न प्रयोगशालाओं में प्रतिवर्ष 34 लाख जीव-जन्तुओं का वध किया जाता है और पूरे विश्व में 96 करोड़ का वध किया जाता है। रामायण के रावण की क्रूरता और महाभारत के कंस की पैशाचिकता को भी आज के मानव ने अँगूठा दिखा दिया है। शास्त्रों में गायन है कि अनंगसरा नाम की स्त्री ने स्वयं के प्राणों की आहुति दे दी लेकिन सर्प को मारने नहीं दिया। परन्तु आज सौन्दर्य प्रसाधनों का हथियार लिए नर-नारी दोनों स्वयं ज़हरीले हो गए हैं। भोले-भोले मूक प्राणियों पर जो अत्याचार और जो बदसलूकी शृंगार की सामग्री बनाने के नाम पर की जाती है, उस पाप की भरपाई वे कौन-से पुण्यों से करेंगे, यह उनको अवश्य विचारना चाहिए। फैशन के लिए पशु-प्राणियों पर किए जाने वाले बेहिसाब जुल्म प्रकृति और संस्कृति दोनों के लिए घातक सिद्ध हो रहे हैं। प्रकृति भी क्रूर मानव पर क्रूरता दिखाने में अति करती जा रही है और संस्कृति ने अपने संरक्षण की छाया को समेट लिया है। यह सत्य है कि सौन्दर्य की चाह मानव मन में आदिकाल से है परन्तु आदिकालीन सौन्दर्य प्रकृति प्रदत्त था। हम सभी, चित्रों में देखते हैं कि देवी-देवताएँ सर्वांग सुन्दर हैं। यह सुन्दरता प्रकृति ने प्रदान की है। उस दैवी युग में किसी को भी कृत्रिम साधन प्रयोग करने की आवश्यकता नहीं थी। **देवी-देवताओं के मन की सुन्दरता चेहरे और व्यक्तित्व को सुन्दर बनाने का आधार थी परन्तु आज तो मन की कुरूपता चेहरे पर साफ झलकती है, उसे ढकने के लिए प्रसाधनों का सहारा लिया जाता है। परन्तु चेहरे पर क्रोध, ईर्ष्या, अहम् और नफरत के भाव हैं तो लाख सौन्दर्य के साधन प्रयोग करने पर भी चेहरा आकर्षक नहीं बन सकता। किसी की नजरें ऐसे चेहरे पर क्षणभर भी टिक नहीं सकतीं। इसलिए सद्गुणों के सात्विक भाव ही चेहरे को या व्यक्तित्व को सुन्दर बनाते हैं। इन अमूल्य सद्गुणों को, बिना मूल्य के ईश्वरीय पढ़ाई द्वारा प्राप्त किया जा सकता है। इसलिए सादगी से जीवन जीना और विचारों को ऊंचा बनाना, सुखी और समृद्ध रहने का सहज रास्ता है।** उपरोक्त चार बातें मांसाहार, लड़ाई-झगड़ा, व्यसन और फैशन छोड़कर, मन को सुधारकर, प्रभु से जोड़कर मानव गरीबी से छुटकारा पा सकता है।

कहा जाता है कि कोई भी स्थिति सदा एक समान नहीं रह सकती। विश्व की गरीबी के ये हालात भी बहुत जल्दी बदलने वाले हैं। शिव भगवानुवाच है कि मैं भारत सहित सम्पूर्ण विश्व की दोनों प्रकार की गरीबी – चरित्र की और धन की, मिटाने के लिए सृष्टि पर अवतरित हुआ हूँ। **मानव के पुण्य के खाते और धन के खाते में सीधा सम्बन्ध है। पुण्य बढ़ने पर ही धन का खज़ाना भी बढ़ जाता है।** पुण्य बढ़ाने का तरीका है परमात्मा पिता की श्रीमत पर चल कर मानव मात्र की सेवा करना। भगवान, वर्तमान समय हर मनुष्य को श्रेष्ठ कर्मों की पूँजी बढ़ाने का व्यवहारिक प्रशिक्षण दे रहे हैं। इस प्रशिक्षण को लेने वाले के धन तथा चरित्र के खज़ाने स्वत: भरपूर हो जाते हैं। प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय की विभिन्न शाखाएँ ही श्रेष्ठ कर्मों के प्रशिक्षण केन्द्र हैं जहाँ कोई भी जाकर नि:शुल्क ज्ञान ले सकता है और सब प्रकार की गरीबी दूर कर सकता है। परमात्मा के सतयुगी सृष्टि के निर्माण के कार्य में हिम्मत का एक कदम बढ़ाने से पदमों की कमाई स्वत: जमा हो जाती है और गुणों की गरीबी के साथ-साथ धन की गरीबी भी मिट जाती है।

☆☆☆

हम सबकी प्यारी माँ

– ब्रह्माकुमार राकेश, मण्डी (हि.प्र.)

आकण्ठ पाप में डूबी, भयभीत धरा के कम्पन से,
शिव संकल्प के पवित्र, रूहानी प्रकम्पन से,
हुआ जन्म रुद्र ज्ञान-यज्ञ की ज्वाला का,
ब्रह्मा का, ब्रह्मा के श्रीमुख से ब्रह्मा की बाला का।।

वो ज्ञान-गुण-खान शिव की हीरा थी,
ब्रह्मा के तपस्वी वन की मीरा थी,
अध्यात्म क्षितिज पर चमकता रोहिणी नक्षत्र थी,
माया रावण के हृदय में चुभा हुआ अस्त्र थी,
वो पतित-पावनी ज्ञान-गंगा थी,
ब्रह्मा की बेटी मुख बोली थी।।

धैर्य, मधुरता, कुशाग्रता आपका श्रृंगार,
कमल, वीणा, गदा, शंख अलंकार,
प्रतिनिधि थी ज्ञान की अमूल्य निधि की,
शिव-शरणागत की, ममत्व भरी परिधि थी।।

ज्ञान की रौशनाई और योग की कलम से,
चेतन दिलों पर लिखी चेतन गीता थी तुम,
अविरल स्नेह सरिता थी तुम,
प्रभु की प्यारी कविता थी तुम,
युगल दाना वैजयन्ती माला का,
प्रथम फरिश्ता देवालय का।।

स्थिर नेत्री, आभायुक्त मुखमण्डल,
लिए हाथ में ज्ञानामृत से भरा कमण्डल,
शक्ति की अक्षुण्ण धारा थी,
अध्यात्म के भाल का तारा थी,
रुद्र ज्ञान-यज्ञ से उत्पन्न रूहानी शमा थी,
नाज है हमको, वो हम सबकी प्यारी मम्मा थी।।

हे आदि शक्ति, महाशक्ति, शिवशक्ति,
बन कामधेनु की शुभकामनापूर्ति,
हे शीतला, भीमा, महाकाली!
विषयों की होली जला डाली,
अकासुर, बकासुर, हिरण्यकश्यप, शूर्पनखा-पूतना,
टिका सम्मुख, माया का कोई भूत ना।।

ज्ञान-योग-धारणा-सेवा सबमें अग्रगामी थी।
शिव-शक्ति-पाण्डव सेना की प्रमुख सेनानी थी।
माया मर्दिनी, विकार-नाशिनी, वीरांगना मर्दानी थी।
वो बाबा की बच्ची सबमें, सबसे सयानी थी।
शुभ-मंगला, विश्वेश्वरी, सुजाता थी।
वो हम सबकी प्यारी यज्ञमाता थी।।

नारायणी, हँस-वाहिनी, ज्ञान-वीणा वादिनी,
सभी स्वरूप थे शिव-शक्ति में,
आराधा जिसे भक्तों ने, भक्ति में,
वो यज्ञमाता सरस्वती जगदम्बा थी।
और ऐसी प्यारी हम सबकी मम्मा थी।।

फालो मम्मा, फालो बाबा,
मुरली में सुन जिक्र तुम्हारा, याद तुम्हारी आती है।
खुले केश, शीतल नयन, वात्सल्यमूर्त,
स्मृति पटल पर अभर आती है।।

हे माँ, जगत-जननी, भारत-गौरव, जगदम्बा,
तेरा कर्ज है भारत पर, हम संकल्प दोहराते हैं।
ले अंचली पवित्रता की, कसम उठाते हैं।
भारत को स्वर्ग बनाते हैं, भारत को स्वर्ग बनाते हैं।।

✦✦✦

स्वर्णिम युग

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय का उद्देश्य है विश्व का श्रेष्ठ परिवर्तन अर्थात् विश्व का सतयुगी सृष्टि में परिवर्तन। भारत के लोग सतयुग, स्वर्ग, स्वर्णिम युग आदि शब्दों से भली-भाँति परिचित हैं। उस युग की उच्चतम मानवीय और प्राकृतिक स्थितियों का वर्णन धर्म-शास्त्रों में जहाँ-तहाँ छुट-पुट रूप में मिलता है। क्रिश्चियन, इस्लामी आदि अन्य-अन्य धर्मों की पुस्तकों में भी हेविन, जन्नत आदि का कुछ-कुछ वर्णन मिलता है। वर्तमान समय परमात्मा पिता ने प्रजापिता ब्रह्मा के साकार माध्यम से उस सम्पूर्ण दुनिया के सम्बन्ध में अनेक रहस्य स्पष्ट किए हैं और कई भाई-बहनों ने दिव्य साक्षात्कारों में भी वहाँ के दिव्य रहन-सहन और अन्य सब प्रकार के दिव्य कार्यों को सम्पन्न होते देखा है। इन सभी प्रकार के अनुभवों को मिला कर स्पार्क के भाई-बहनों ने एक शोध-पत्र तैयार किया है जिसको हम ज्ञानामृत के आगामी अंकों में क्रमवार प्रकाशित करने जा रहे हैं। आपकी प्रतिक्रिया का इन्तज़ार रहेगा।

— सम्पादक

निरन्तर सम्पूर्ण सुख-शान्ति-सम्पत्ति और आरोग्य की कामना मानवीय मन में सदा बनी रहती है। परन्तु कलियुग के अन्त में सम्पूर्ण सुख, सम्पूर्ण शान्ति और सम्पूर्ण आरोग्य किसी को भी प्राप्त नहीं। चाह है परन्तु सम्पूर्ण प्राप्ति न होने के कारण अक्सर यह सवाल सभी के मानस पटल पर उभरता देखा जाता है कि इस प्रकार की सम्पूर्ण प्राप्तियाँ और वे भी व्यक्तिगत स्तर पर नहीं बल्कि समस्त मानव जाति के लिए एक ही समय प्राप्त हों, क्या ऐसा सम्भव है? क्या ऐसी स्वर्णिम दुनिया या सुखमय संसार वास्तविकता थी या मानवीय मन की कल्पना? यह इतिहास की सच्चाई थी या दंतकथाओं की रंजकता? इसकी कामना मनुष्यात्मा द्वारा गतकाल में किए अनुभव का परिणाम है या उसकी इनके प्रति आशा का परिणाम?

जितना गहराई से इस बात के चिन्तन में अंतर्मुख हुआ जाता है, जितना इतिहास के पन्नों से यात्रा की जाती है, जितना सभी धर्मशास्त्रों का अध्ययन किया जाता है और जितना विज्ञान के द्वारा मनुष्य जाति को दी गई अनमोल उपलब्धियों के केवल सकारात्मक उपयोग को देखा जाता है, उतना ही यह स्वर्णिम सुखमय संसार केवल कल्पना नहीं किन्तु वास्तविकता लगती है। लेकिन आखिर यह स्वर्णिम सुखमय संसार है क्या? कैसा था स्वर्णिम युग? प्रचुर धन-सम्पदा हो, आनन्दित मन हो, स्वस्थ तन हो, सुखदाई सम्बन्ध हों, चारों ओर आनन्ददायी माहौल हो, चिन्ता या भय की अविद्या हो, ऐसा श्रेष्ठ भाग्य सैंकड़ों वर्षों तक व्यक्ति, परिवार, समाज, देश और विश्व में सभी का एक ही समय पर हो, उसको स्वर्ग कहा जाता है।

स्वर्ग के विषय में अनेकानेक धर्मों की मान्यतायें

''बाईबल और कई अन्य अंग्रेजी किताबों में स्वर्ग के सौंदर्य की तुलना वन और बाग से की गई है। ईरान, ईराक, सिरिया, उत्तरी अरब, मिस्र (इजिप्ट), उत्तर अफ्रीका, यूनान और दक्षिणी युरोप के क्षेत्रों में जो नयनरम्य वन हैं, उनकी सुन्दरता के कारणवश ही सिन्धु की घाटी से लेकर नील नदी की घाटी तक बाईबल में स्वर्गलोक बताया गया है।''

– कैलासनाथ कौल की पुस्तिका से।

''भगवान ने पूर्व से लेकर पश्चिम तक जो स्वर्ग लोक बसाया उसमें चार नदियाँ बहती थीं। खुदा ने पैदा किए मनुष्यों को वहीं बसाया''

– बाईबल का पहला अध्याय।

''महा जलप्रलय होने का कारण देवता और आर्यों जैसी श्रेष्ठ जाति का पतन होना है। परमात्मा ने जिस

सत्पुरुष को अपने शुभआगमन का साक्षात्कार कराया वही सज्जन मनुष्य (मनु) थे। जिन्हें हम वर्तमान के आदिपिता मानते हैं।''

''आर्यों के भारत में बाहर से आगमन का कोई प्रमाण नहीं है और इतिहास भी इस बारे में मौन है। यह सम्भव है कि जलप्रलय के उपरान्त सिन्धु से नील क्षेत्र तक की स्वर्ग-सभ्यता के खण्डित होने के बाद कुछ लोग समूह में इधर-उधर हुए हों। और इसी स्थलान्तरण को लोगों ने आर्य लोगों का भारत में बाहर से आगमन समझ लिया। हमारे पूर्वज जो देव या अमर जाति के थे, इसी पावन वसुंधरा के निवासी थे।''

– ब्राह्मण वैदिक ग्रंथ

''स्वर्ग में मनुष्य वृद्ध नहीं होगा। वहाँ डर, मृत्यु नहीं होगा''

– अथर्ववेद 18-4-4.

''स्वर्ग में संगीत और गीतों का आनन्द उपलब्ध है''

– ऋग्वेद-10, 135/7

अथर्ववेद 4, 37/4.

सतयुग में तो सभी मानव अपने नैतिक मूल्यों के उच्चतम स्तर पर होते हैं .... हर एक अपने कार्य को पूर्ण ज़िम्मेवारी से करता है 'मैं कुछ कर रहा हूँ' इस भावना से ऊपर हर एक के मन में अपने कार्य के प्रति पूर्ण श्रद्धा होती है और सभी अपने-अपने कार्यों को उचित तरीके से आनन्दित होकर सम्पन्न करते हैं।

वहाँ कार्य करते वक्त सभी सरल और हल्के रहते हैं। जैसे आज व्यक्ति अपने परिवार के प्रति ज़िम्मेवारी निभाने अर्थ कार्य तो करता है किन्तु उसके मन में 'मैं कोई उपकार कर रहा हूँ' यह भाव नहीं होता। ऐसे वहाँ भी विश्व ही हमारा परिवार है, यह भावना रखते हुए व्यक्ति हदों से ऊपर उठ कर सहज भाव से कार्य करता है। जैसे एक परिवार में माँ अपने कर्त्तव्य को निभाते वक्त हल्के दर्जे का समझा जाने वाला कार्य भी, बड़े प्रेम से, अपनत्व के भाव से, पालना के कर्त्तव्यभाव से करती है, उसमें कोई लेन-देन का हिसाब-किताब या ऊँच-नीच, छोटे-बड़े का भेदभाव नहीं होता। ऐसे ही वहाँ भी हर व्यक्ति अपनत्व की भावना से, पूर्ण ज़िम्मेवारी से, सहजभाव से आनन्दित होकर अपना कार्य करेगा। इसलिए कार्य से उसके आनन्द में वृद्धि होगी न कि तनाव या थकावट का अनुभव। सुवर्ण युग की मुख्य-मुख्य व्यवस्थाओं पर प्रकाश डाला जा रहा है –

राजतन्त्र

जैसे विश्व ईसाई संघ में एडवर्ड-I, एडवर्ड-II और एडवर्ड-III हैं, वैसे ही सुवर्ण युग में श्री लक्ष्मी और श्री नारायण पहले, दूसरे, तीसरे और आठवें वंश तक होंगे। सुवर्ण-युगीन विश्व की राज्यसत्ता स्थिर और अचल होती है। पूरे विश्व पर एक ही राज्यसत्ता होती है। उसे कोई भी छीन या लूट नहीं सकता। एक देश, एक भाषा, एक धर्म के साथ-साथ श्री लक्ष्मी और श्री नारायण का पूरी वसुंधरा, आकाश और समुद्र पर पूर्ण आधिपत्य होगा। उनके शासनकाल में कोई भी नैसर्गिक दुर्घटना नहीं होगी। धान्य भण्डार हमेशा भरपूर होंगे। मधुरता ही राजा का मुख्य गुण होगा।

प्रशासन

सतयुग में प्रशासनकर्त्ता सतो-प्रधान हैं। राज्यकारोबार भी श्रेष्ठ हैं। स्वर्णिम दुनिया में सब एक राजा के हुक्म पर चलते हैं। वहाँ बादशाह में पूरी ताकत रहती है इसलिए कोई वज़ीर आदि नहीं होते हैं। महाराजा एक होगा, दूसरे छोटे राजाएँ होंगे। हरेक को अपनी-अपनी राजधानी होगी। जैसे-जैसे युग परिवर्तन होता जाता है देवताओं की गिरती कला होने लगती है। तब द्वापरयुग में राय लेने की, वज़ीर रखने की आवश्यकता महसूस होती है। वहाँ का सारा कारोबार सत्यता के आधार पर ही चलता है। दरबार बहुत बड़ी होती है, सब राजे-रजवाड़े आपस में मिलते हैं। जैसे कि स्नेह मिलन होता है, इस

सभा में छोटे-छोटे राजाओं को, उनके परिवार वालों को बुलाया जाता है। साहूकारों को ऐसी सभा में कभी-कभी आमन्त्रण देंगे। अन्न-उपज, महलों का निर्माण आदि सारे क्षेत्र एक-दूसरे के साथ बहुत ही सहयोग से कार्य करते हैं। लेन-देन में पूर्ण अपनापन होता है। प्रशासनिक कार्य एक परिवार की तरह चलाया जाता है। हर एक व्यक्ति की ज़रूरत पर तथा योग्यता पर पूर्ण ध्यान और आदर-सम्मान दिया जाता है। वहाँ सब व्यक्ति सारे साधनों से परिपूर्ण होते हैं इसलिए वहाँ कोई स्वार्थ की भावना नहीं होती है। इसलिए राज्य सरलता से और हल्केपन से चलता है। जल्दबाज़ी वहाँ बिल्कुल नहीं होती क्योंकि हर कोई शान्तिपूर्ण ढंग से रहता है।

वहाँ राजा और प्रजा के बीच में स्नेह का अटूट सम्बन्ध है। भारत के प्राचीन शास्त्रों में वर्णन है कि प्रजा अपनी ज़रूरत से ज़्यादा धन-सम्पत्ति या अन्न आदि प्रेम-भाव से ही राजा के धन भण्डार में या अन्न भण्डार में रख आती थी और राजा उसे प्रजा के कार्य में लगाता था। वहाँ राजाई परिवार को कोई कार्य करने की ज़रूरत नहीं होगी। प्रजा को कमाना पड़ेगा लेकिन उसमें भी नम्बर हैं। कोई साहूकार प्रजा होगी कोई साधारण प्रजा। साहूकार प्रजा को ज्यादा कमाने की आवश्यकता नहीं पड़ेगी। वहाँ कमाई करना भी एक श्रेष्ठ भाव से होता है। गरीब तो वहाँ होते ही नहीं। सतयुग में आयु साधारणतया 150 वर्ष तक की होती है। इतनी आयु में मानव अनेक बातें सीखेंगे। उसी कारण समाज सयाना और समझदार होता है और राज्य अधिकारी भी इतने अनुभवी होते हैं जिससे राज्य व्यवस्था अच्छी होती है। सतयुग में भी नया-नया राज्य होने के कारण अनेक बातों का निर्णय करना होता है। जैसे आज की सृष्टि में अनेक बातों में उलझन आती है तो वहाँ पर मीठी उलझनें आएँगी जैसे कि महल ऐसा हो या ऐसा, मुकुट का डिजाइन कैसा हो, आज भोजन पर किसको निमन्त्रण दें इत्यादि।

वहाँ कर (tax) प्रणाली नहीं होगी। हरेक के पास ज़रूरत से ज़्यादा धन-सम्पत्ति होगी। एक-दूसरे को सौगात के रूप में धन अथवा वस्तु भेंट करेंगे। वहाँ की अर्थव्यवस्था दान की भावना से भी ऊँच, एक परिवार की भावना के आधार पर चलती है। परिवार के अन्दर प्रशासन इस प्रकार का होता है कि प्रत्येक अपनी-अपनी फर्जअदाई के रूप में कार्य करता है। स्वर्णिम दुनिया में कोई अन्तिम क्षण तक कारोबार नहीं करेंगे। विश्व महाराजन स्वयं ही अपने उत्तराधिकारी को गद्दीनशीन करके राज्य कारोबार के अनेकानेक पहलुओं की शिक्षा और समझ देंगे।

(क्रमश:)

★★★

क्रिया और प्रतिक्रिया

यदि हम किसी को दुःख देने का विचार करते हैं तो पहले उस विचार की प्रतिक्रिया स्वरूप स्वयं भी उतना ही दुःखी होते हैं। वास्तव में हम जो देते हैं वही पाते हैं। यदि हम दूसरों को ईर्ष्या-द्वेष देंगे तो हमको भी वही मिलेगा। यदि दूसरों के लिये सुख-शान्ति की कामना करेंगे तो हमें भी सुख-शान्ति ही मिलेगी। यदि हम प्रेम बाँटेंगे तो हमें भी प्रेम ही मिलेगा। जैसे किसी पहाड़ी से टकरा कर हमारी प्रतिध्वनि वापस लौट आती है। वैसे ही दूसरों के प्रति हमारी ईर्ष्या, द्वेष, प्रेम आदि सब हमारे पास पुनः वापस लौट आता है। अतः आध्यात्मिक पथ के पथिकों के लिये यह अत्यावश्यक है कि वे दत्तात्रेय की तरह सबसे गुण ग्रहण करें तथा निरन्तर स्व-चिन्तन और ईश्वर-चिन्तन करें। पर-छिद्रान्वेषण आध्यात्मिक जीवन के लिये विष-तुल्य है। पर चिन्तन पतन की जड़ है और आत्म-चिन्तन उन्नति की सीढ़ी है। ✦✦✦

जीवन रूपी दर्पण

–ब्रह्माकुमारी उमा, सुमेरपुर

मानव जीवन की कीमत संसार की किसी भी वस्तु से मापी नहीं जा सकती। फिर भी चूँकि हीरा सबसे कीमती माना जाता है इसलिए मानव जीवन हीरे तुल्य कह दिया जाता है। है तो यह हीरों से भी अनमोल। ऐसे अमूल्य खजाने को मानव किस प्रकार प्रयोग में लाता है, इसी से उसकी बुद्धि की श्रेष्ठता या निकृष्टता निर्धारित होती है। आप अपने जीवन का कैसे उपयोग कर रहे हैं, निम्नलिखित कहानी रूपी ज्ञान-दर्पण में देख सकते हैं –

एक बार एक प्रसिद्ध जौहरी की अल्पायु में मृत्यु हो गई। उसकी पत्नी तथा एकमात्र पुत्र पर विपत्ति आ गिरी। जौहरी अपने पीछे एक बहुमूल्य हीरा छोड़ गया था। एक दिन माता के आदेश से जौहरी का पुत्र हीरे को लेकर बाजार गया और एक अच्छा पारखी उसके बदले में अपनी सारी सम्पत्ति देने को तैयार हो गया। उसने अपनी तीन दुकानें बारी-बारी से खोल कर लड़के को दिखाईं और शर्त रखी कि पहली दुकान में 15 मिनट, दूसरी में अगले 35 मिनट और तीसरी में अगले 10 मिनट खड़े रह कर देखने तथा सामान को हाथ लगाने की छूट दी जाएगी। जिस-जिस चीज़ को वह हाथ लगाएगा, वह-वह चीज़ उसके घर भिजवा दी जाएगी। इसके बाद दूर देश से दूसरे सौदागर आने वाले हैं, उनके साथ व्यापार की बातें करनी हैं इसलिए कुल 60 मिनट में उसे सौदा पूरा कर लेना है।

लड़के ने हाँ में सिर हिलाया और पहली दुकान में घुस गया। उसने देखा कि दुकान बहुत सजी हुई है। उसमें लाखों रुपये का एक-एक हीरा रखा हुआ है। कई बक्से पड़े हुए हैं, जो चमक रहे हैं। हीरा तो दूर रहा, उसने ऐसा बक्सा भी नहीं देखा था। वह चकरा गया। उसके साथ एक आदमी था, जो घड़ी में समय देख रहा था। उसने कहा कि देखो, पाँच मिनट हो गए हैं। लड़का बोला - ठहर-ठहर, हल्ला मत कर! पन्द्रह मिनट बाद तो यहाँ रहने देंगे नहीं, इसलिए अच्छी तरह से देख लूँ। देखते-देखते पन्द्रह मिनट हो गए पर देखने की लालसा अभी भी अधूरी ही थी। साथी आदमी बोला कि बस, समय पूरा हो गया है, अब बाहर निकलो। अब इसमें से कोई वस्तु छू भी नहीं सकते हो, एक दाना भी ले नहीं सकते हो। लड़का बाहर निकल गया। उसे थोड़ा दु:ख हुआ परन्तु तुरन्त दूसरी दुकान के भीतर जाकर वहाँ की विलक्षण सजावट को देख कर पहली दुकान से निकलने का दु:ख भूल गया। वह सोचने लगा कि यह तो कोई अजायबघर है। उसमें खाने-पीने, पहनने-ओढ़ने आदि की सैंकड़ों वस्तुएँ थीं। तरह-तरह की सवारियाँ थीं। तरह-तरह का नाच-गाना हो रहा था। शब्द, स्पर्श, रूप, रस और गन्ध इन पाँचों विषयों की तरह-तरह की चीज़ें वहाँ मौजूद थीं। वह उन चीज़ों में मस्त हो गया। कभी वह मोटर पर चढ़ता, कभी बग्घी पर चढ़ता, कभी झूला झूलता, कभी नाटक देखता, कभी सिनेमा देखता। लड़के ने पूछा कि क्या दुकान आगे और लम्बी है? वह आदमी बोला कि हाँ, आगे दुकान बहुत लम्बी तथा ज़्यादा सुन्दर है। लड़का ज्यों-ज्यों आगे बढ़ता गया, त्यों-त्यों अधिक सुन्दरता दिखती गई। साथ में जो आदमी था वह समय बताता रहा कि अब पाँच मिनट हो गए, अब 10 मिनट हो गए। पर लड़के ने सोचा कि अभी तो आँखों को तृप्त कर लें। बाद की बाद में देखी जाएगी। इस प्रकार, देखते-देखते पैंतीस मिनट पूरे हो गए और वह इस दुकान ने भी बाहर निकाल दिया गया। पुन: थोड़ा दु:ख उसे हुआ पर तीसरी दुकान के आकर्षण ने दु:ख को कम कर दिया। तीसरी दुकान में कई प्रकार के मान-सम्मान के साधन, आराम के गद्दे-

बिस्तर, सेवा करने वाले नौकर तथा खुशबू और संगीत आदि के भिन्न-भिन्न आकर्षक पदार्थ थे। वह कभी बिस्तर पर उछलता, कभी सोफे पर कूदता, कभी खुशबू अपने पर छिड़कता, कभी संगीत का आनन्द लेता। साथ वाले आदमी ने कहा कि देखो, पहली दुकान गई, दूसरी दुकान भी गई और अब तीसरी दुकान भी जा रही है। अब समय बहुत थोड़ा बचा है। अब जल्दी सम्भल जाओ। जो लेना है ले लो, नहीं तो दुकान से निकलते-निकलते समय पूरा हो जाएगा। यही हुआ, समय पूरा हो गया। उसे बाहर की ओर धकेला गया। दुकान से निकलते समय उसे बड़ा मानसिक कष्ट हुआ। वह माथे पर क्रोध के भाव लेकर बाहर आया। दुकान के मालिक ने हीरा अपने पास रख लेने की शर्त पहले ही रख दी थी। इसलिए लड़का खाली हाथ वापस लौट गया।

सोचिए, कहीं आप भी उस लड़के की तरह जीवन यात्रा के सभी पड़ावों को इन्द्रियों के रस में डूबे-डूबे तो नहीं पार कर रहे हैं? पहला पड़ाव है 15 वर्ष तक के किशोर जीवन का जिसमें मनुष्य पुण्य के खाते से अन्जान बना रहता है और यह कह कर कि अभी तो खाने-खेलने के दिन हैं, बड़ा होकर पुण्य कर्म करूँगा, वह समय को गफलत में गुज़ार देता है। दूसरा पड़ाव है गृहस्थ जीवन का, इसको भी वह स्त्री, घर, पुत्र, कलत्र, धन, दौलत की आसक्ति, मोह, संग्रह आदि में पड़ कर यह कहते हुए पार कर लेता है कि बूढ़ा होकर भगवान को याद करूँगा। सबकुछ छोड़कर आश्रम में जा बैठूँगा। फिर तीसरा पड़ाव अर्थात् वानप्रस्थी बनने का समय आ जाता है और वह पहले से भी ज़्यादा उलझ जाता है। इन्द्रियाँ शिथिल होने लगती हैं, इच्छाएँ बढ़ने लगती हैं। सभी को अपने अनुसार चलाने की अंकुशहीन मनसा बलवती होने लगती है। संकल्प रूपी जल उन्हीं गड्ढों की ओर दौड़-दौड़ कर जाता है जो उसने जवानी में और गृहस्थी का जंजाल बुनने में खोदे थे। ईश्वर को जाना नहीं, उससे सम्बन्ध जोड़ा नहीं। बहुत काल के अभ्यास के बिना एकदम ईश्वर की याद टिकती भी नहीं। घर की गद्दी छिनने लगती है जिसे ज़ोर ज़बरदस्ती करके पकड़ने की कोशिश में तनाव, कलह-क्लेश बढ़ता है। इसी अशान्ति से घिरा, उत्तेजना, रोष और क्रोध की बेड़ियों में जकड़ा वह साँसों की आखरी कड़ी तक पहुँच जाता है। वह संसार से जाना नहीं चाहता परन्तु नियति झटके के साथ शरीर से आत्मा को अलग कर देती है। बेमन से वह खाली हाथ ही अगली यात्रा के लिए रवाना हो जाता है। जीवन-पुष्प का सारा मधु व्यर्थ में लुटा कर वह कुछ दिनों के बाद गुमनाम और गुमकाम हो जाता है।

उपरोक्त जीवन-दर्पण में अपना कर्म रूपी चेहरा देख कर आप उसे बदल सकते हैं, सही दिशा दे सकते हैं। वर्तमान समय परमपिता परमात्मा शिव धरती पर अवतरित होकर मानव को आसुरी वृत्ति से मुक्त कर देवत्व की ओर ले जा रहे हैं। उनके दिए ज्ञान-रत्नों से जीवन अमूल्य बन जाता है। याद रखें –

परमपिता शिव लेकर आए
ज्ञान-रत्नों के थाल।
कहते-बच्चो, आओ बच्चो,
हो जाओ मालामाल।।

☆☆☆

विघ्नों से उद्विग्न होना – यह हमारी अपनी मानसिक अवस्था की त्रुटि है। राई को पहाड़ समझकर उसे लाँघने का साहस न करना – यह हमारी अपनी ही दृष्टि का दोष है। विघ्नों का बड़ा या छोटा दिखाई देना वैसे ही है जैसे कि किसी कन्केव आईने के सामने कोई व्यक्ति बड़ा और कन्वेक्स आईने के सामने वही व्यक्ति अपने आपको छोटा दिखाई देता है। अतः विघ्न को विघ्न न मानकर उन्हें पुरुषार्थ रूपी लूडो का खेल मानकर अथवा नदी को पार करने वाला पुल मानकर, उस पर चढ़ जाना चाहिए। ✱✱✱

1. नेपानगर- नेपा मिल्स के महाप्रबन्धक भ्राता उपाध्य जी को ईश्वरीय सौगात देती हुई ब्र.कु. मंगला बहन। **2. खुरजा (अलीगढ़)**- आध्यात्मिक चित्र प्रदर्शनी का उद्घाटन करते हुए डॉ. भ्राता मोहन लाल अग्रवाल जी तथा ब्र.कु. शीला बहन जी। **3. साम्बा (पंजाब)**- तहसीलदार जी को ईश्वरीय सौगात देती हुई ब्र.कु. रानी बहन। **4. फिरोजपुर (कैन्ट)**- निरंकारी मिशन के प्रधानाचार्य भ्राता नरिन्द्र सिंह जी, ब्र.कु. बहनों को सम्मानित करते हुए। **5. सराही (हि.प्र.)**- न्यायाधीश भ्राता बहादुर सिंह को ईश्वरीय सौगात देती हुई ब्र.कु. विमला बहन। **6. गुराया**- महन्त 1008 बासुदेव बियास जी महाराज को ईश्वरीय सौगात देती हुई ब्र.कु. इन्द्रा बहन। **7. देहली (गरिमा गार्डन)**- आध्यात्मिक कार्यक्रम के बाद उप-पुलिस निरीक्षक भ्राता विनोद कुमार यादव, ब्र.कु. दादी कमलमणि, ब्र.कु. उर्मिला बहन, ब्र.कु. जगरूप भाई तथा अन्य समूह चित्र में। **8. देहली (कश्मीरी गेट)**- उत्तरी रेलवे के वित्त सलाहकार तथा मुख्य लेखाकार अधिकारी भ्राता आर.सी. चौहान का स्वागत करती हुई ब्र.कु. मीरा बहन।

1. मुजफ्फरपुर- 'मन-प्रबन्धन तथा मेडिटेशन' कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए ब्र.कु. कृष्ण अग्रवाल भाई, प्रो. भ्राता राज नारायण राय, डॉ. भ्राता बी.एल. सिंहानिया, डॉ. भ्राता बी.पी. मिश्रा, ब्र.कु. रानी बहन, मेयर भ्राता समीर कुमार, ब्र.कु. भारत भूषण भाई, भ्राता राम बांका तथा भ्राता महेन्द्र चौधरी। **2. रिवाड़ी-** प्रसिद्ध व्यापारी भ्राता सत्येन्द्र जी तथा प्राचार्य भ्राता रमेश शर्मा को ईश्वरीय सौगात देती हुई ब्र.कु. दर्शना बहन। **3. कायमगंज (फर्रुखाबाद)-** चरित्र निर्माण आध्यात्मिक चित्र प्रदर्शनी का उद्घाटन करते हुए बैंक ऑफ इंडिया प्रबन्धक भ्राता प्रवेन्द्र गुप्ता जी, ब्र.कु. मिथलेश बहन तथा अन्य। **4. बरेली-** केन्द्रीय कारागार में ईश्वरीय सन्देश देती हुई ब्र.कु. नीता बहन। मंच पर जेल अधीक्षक भ्राता यादबेन्द्र शुक्ला जी, ब्र.कु. एस.एस. भारतीय, ब्र.कु. सरोज बहन तथा ब्र.कु. राजकृष्ण जी भी विराजमान हैं। **5. उदयपुर-** 'मेवाड़ की मीरा' झाँकी के लिए स्मृति चिन्ह भेंट करने के बाद नगर परिषद कमिश्नर भ्राता नागदा जी, अध्यक्ष भ्राता युधिष्ठिर कुमावत जी, बांसी के राजा साहब, ब्र.कु. रीता बहन, ब्र.कु. ज्योति बहन तथा अन्य प्रसन्न मुद्रा में। **6. सिकन्दराराऊ (हाथरस)-** आध्यात्मिक कार्यक्रम में सम्बोधित करती हुई ब्र.कु. भावना बहन। साथ में मंच पर पूर्व खण्ड विकास अधिकारी भ्राता बी.एल. अग्रवाल, ब्र.कु. सीता बहन, डॉ. भ्राता कवि वीरेन्द्र तरुण तथा ब्र.कु. श्याम पचौरी जी भी उपस्थित हैं। **7. पतलीकुहल (मनाली)-** चरित्र निर्माण आध्यात्मिक चित्र प्रदर्शनी का उद्घाटन करते हुए अध्यक्ष भ्राता दिलेराम जी। साथ में ब्र.कु. संध्या बहन, ब्र.कु. वीना बहन तथा अन्य भाई-बहनें। **8. देवबन्द-** व्यसन मुक्ति शिविर का उद्घाटन करते हुए नगरपालिकाध्यक्ष भ्राता जियाउद्दीन अंसारी जी। साथ में ब्र.कु. गीता बहन तथा जगपाल भाई।

1. पानीपत- शान्ति अनुभूति संध्या कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए एस.डी.एम. भ्राता सतपाल सिंह, जिला न्यायाधीश भ्राता गुरमीत सिंह, ब्र.कु. मोहिनी बहन, एपैक्स के पूर्व अध्यक्ष भ्राता के.एल. आहूजा, ब्र.कु. सरला बहन तथा ब्र.कु. भारत भूषण भाई। 2. धार- आध्यात्मिक चित्र प्रदर्शनी के उद्घाटन पश्चात् विधायक भ्राता जसवंत सिंह राठौर, ब्र.कु. सत्या बहन, ब्र.कु. रेखा बहन तथा अन्य प्रसन्न मुद्रा में। 3. बठिंडा- रोटरी इन्टरनेशनल के जिला गवर्नर भ्राता रमेश चन्द्र जी जैन, ब्र.कु. कमलेश बहन को सम्मानित करते हुए। साथ में पूर्व जिला गवर्नर डॉ. भ्राता सतपाल सिंगला जी। 4. सुनाम- 'समय की पुकार' विषयक कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए पंजाब नेशनल बैंक के वरिष्ठ क्षेत्रीय प्रबन्धक भ्राता सतीश कुमार कालडा, ब्र.कु. अमीर चन्द भाई, रोटरी क्लब जिला गवर्नर भ्राता रमेश चन्द्र जैन, ब्र.कु. कमला बहन, ब्र.कु. मीरा बहन तथा अन्य। 5. नंगलडाम- आध्यात्मिक कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए विधायक भ्राता राणा कंवरपाल सिंह। ब्र.कु. प्रभा मिश्रा बहन तथा एच.आर.डी. निदेशक जी भी मंच पर विराजमान हैं। 6. सिवनी- सर्वधर्म सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए अनेक धर्म प्रतिनिधि तथा ब्र.कु. ज्योति बहन। 7. बिजुरी (शहडोल)- नए सेवास्थान का उद्घाटन शिवध्वज लहरा कर करते हुए ठेकेदार भ्राता शिव कुमार अग्रवाल, ब्र.कु. देवकी बहन, ब्र.कु. अलका बहन तथा अन्य। 8. बलिया- 'योग शिविर' कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए उपजिलाधिकारी भ्राता केदार प्रसाद गुप्ता। साथ में हैं ब्र.कु. बहनें।
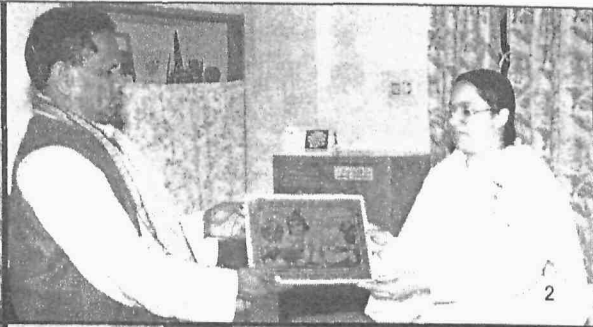
1. देहली (पंजाबी बाग)- 'तनाव मुक्त जीवन' विषय पर प्रवचन करते हुए ब्र.कु. भ्राता बृजमोहन जी। साथ में ब्र.कु. आशा बहन, ब्र.कु. दादी रुक्मिणी जी तथा निगम पार्षद भ्राता सुरजन लाल पवार भी उपस्थित हैं। **2. जगदलपुर**- विधायक भ्राता लच्छूराम कश्यप को ईश्वरीय सौगात देती हुई ब्र.कु. मंजूषा बहन। **3. ज्वालामुखी**- आध्यात्मिक कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए पूर्व विधायक भ्राता मेलाराम सावर, बहन उमा सूद तथा ब्र.कु. सन्तोष बहन। **4. मण्डला**- विधायक भ्राता दैवी सिंह सय्याम को ईश्वरीय सौगात देती हुई ब्र.कु. ओमलता बहन। **5. आगरा (सिकन्दरा)**- केन्द्रीय कारागार के अधीक्षक भ्राता एस.एस. चौहान, ब्र.कु. सरिता बहन तथा ब्र.कु. गीता बहन को जेल-सेवा के लिए सम्मान-पत्र प्रदान करते हुए। **6. बटाला**- श्री श्री 1008 निरंजन दास जी के साथ ज्ञान-चर्चा करती हुई ब्र.कु. गीता बहन। **7. रतलाम**- विधायक भ्राता धूलजी चौधरी को ईश्वरीय सौगात देती हुई ब्र.कु. सरला बहन। **8. पठानकोट**- 'राजयोग द्वारा खेलों में सफलता' विषयक कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए पंजाब क्रिकेट कोच भ्राता कल्याण सिंह, प्राचार्य भ्राता के.वी. चोपड़ा, ब्र.कु. सत्या बहन, ब्र.कु. आशा बहन तथा अन्य।

ब्र.कु. आत्मप्रकाश, सम्पादक, ज्ञानामृत भवन, शान्तिवन, आबू रोड द्वारा सम्पादन तथा ओमशान्ति प्रेस, शान्तिवन-307510, आबू रोड में प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के लिए छपवाया। सह-सम्पादिका ब्र.कु. उर्मिला, शान्तिवन
E-mail: gyanamrit@vsnl.com Ph.No.: (02974) 228125, 228126 bkatamad1@sancharnet.in

1. मलेशिया- इक्वाडर के राजदूत डॉ. भ्राता मरकॉस, ज्ञान-चर्चा के बाद ब्र.कु. मीरा बहन, मारिया बहन तथा अन्य के साथ समूह चित्र में। **2. जोधपुर-** राजस्थान पत्रिका के प्रधान सम्पादक डॉ. भ्राता गुलाब कोठारी जी, ब्र.कु. अवतार भाई को सर्वश्रेष्ठ पत्रकारिता सम्मान प्रदान करते हुए। **3. चालीसगाँव-** श्री श्री 1008 महामण्डलेश्वर शान्तिगिरि जी महाराज के साथ में ज्ञान-चर्चा के बाद ब्र.कु. रामनाथ भाई, ब्र.कु. रोहित भाई तथा अन्य समूह चित्र में। **4. करजन (गुजरात)-** मशहूर गुजराती फिल्म अभिनेता भ्राता नरेश कनोडिया, भ्राता रामसिंह राठवा, पूर्व सांसद भ्राता महेश कनोडिया को ईश्वरीय सौगात देती हुई ब्र.कु. दीपिका बहन। **5. आबू पर्वत (ज्ञान सरोवर)-** संस्कृति एवं कला प्रभाग द्वारा आयोजित शिविर का उद्घाटन करते हुए राजयोगिनी दादी मनोहर इन्द्रा जी, ब्र.कु. उषा बहन, ड्रामा निदेशक भ्राता वसंत भाई घासवाल, ड्रामा निदेशक बहन पल्लवी व्यास, प्राचार्या बहन प्रतिमा पुरोहित तथा अन्य। **6. मनाली-** हिमाचल प्रदेश के कृषि मन्त्री भ्राता राजकृष्ण गौड़ को ईश्वरीय सौगात देती हुई ब्र.कु. संध्या बहन। **7. देहरादून-** उत्तरांचल के गन्ना मन्त्री भ्राता साधुराम जी, ब्र.कु. मन्जू बहन को सम्मानित करते हुए। **8. अहमदनगर-** भारतीय 'ए' क्रिकेट टीम के कोच भ्राता संदीप पाटिल को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु. दीपक भाई।

Regd. No. 10563/65, Postal Regd. No. RJ/WR/25/12/2003-2005, Posted at Shantivan-307510 (Abu Road) on 5-7th of the month.

1. मुम्बई (बोरिवली)- सेवाकेन्द्र के रजत जयन्ती समारोह का उद्घाटन करते हुए राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी जी, ब्र.कु. मोहिनी बहन जी, पार्श्व गायिका बहन कविता कृष्णमूर्ति जी, फिल्म अभिनेत्री बहन भाग्यश्री जी, पार्श्व गायक भ्राता सुरेश वाडकर जी, संगीतकार भ्राता श्रवण कुमार जी, फिल्म अभिनेता भ्राता सचिन जी, सांसद भ्राता रामदास आठवले जी, संगीत निदेशक भ्राता ललित सोढ़ा जी, संगीत निदेशक भ्राता ओम व्यास जी, ब्र.कु. दिव्यप्रभा बहन तथा अन्य। 2. रजत जयन्ती समारोह में उपस्थित भाई-बहनें।